शिक्षा का उत्थान

शिक्षक का सम्मान

शिक्षण संवाद

मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका

वर्ष-१
अंक-७

माह-जनवरी २०१६

नव वर्ष
नव संकल्प

आओ हाथ से हाथ मिलाएं, बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएं

शिक्षण संवाद

मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका

वर्ष-१
अंक-७

माह-जनवरी २०१६

प्रधान सम्पादक

श्री विमल कुमार

प्रबन्ध सम्पादक

डॉ. सर्वेष्ट मिश्र

सुश्री ज्योति कुमारी

सम्पादक

प्रांजल सक्सेना

आनन्द मिश्र

सह सम्पादक

डॉ० अनीता मुद्गल

आशीष शुक्ल

छायांकन एवं मुख्यपृष्ठ

वीरेन्द्र परनामी

ग्राफिक एवं डिजाइन

आनन्द मिश्र

विशेष सहयोगी

शिवम सिंह, दीपनारायण मिश्र

आओ हाथ से हाथ मिलाएं
बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएं

मिशन शिक्षण संवाद

व्हाट्सएप एवं सम्पर्क नं0
9458278429

ई मेल :
shikshansamvad@gmail.com

वेबसाइट :
www.missionshikshansamvad.com

शुभकामना सन्देश

विद्यालय क्या हैं? एक ऐसे संस्थान जहां पर रोज जमावड़ा होता है कुछ छात्रों का जो कुछ सीखने आते हैं कुछ नया, या शायद खेलने आते हैं जो भी हो एक शिक्षक का कार्य होता है उन्हें सिखाना। बदलते जमाने में पुराने ही तरीकों से पढ़ाना कहीं से भी अनुकूल नहीं कहा जा सकता है। नये जमाने में नयी विधियों से शिक्षण करना चाहिए। पुराने तरीकों में उलझे रहने के कारण एक नीरसता का माहौल बन गया था और विद्यालयी व्यवस्था पटरी से उतरने लगी थी।

लेकिन प्रसन्नता होती है कि कुछ नवाचारी शिक्षकों ने मिलकर नये–नये तरीके ईजाद किए, नवाचार को असली स्वरूप अपनाया। इन सबका परिणाम ये हुआ कि विद्यालय जो अपनी लय खो चुके थे। आज पुनः लय में आ रहे हैं जिसका परिणाम बढ़ती छात्रसंख्या और शिक्षण की गुणवत्ता के रूप में परिलक्षित हो रहा है। ऐसे प्रयासों में मिशन शिक्षण संवाद सदा आगे रहा है। मिशन शिक्षण संवाद से जुड़े शिक्षकों की कार्यशाला का आयोजन पिछले दिनों सिद्धार्थनगर में हुआ था। जहाँ पर देखने को मिला कि प्रदेश के विभिन्न शिक्षक किस तरह से अपने विद्यालय को नई ऊँचाइयों पर ले जा रहे हैं। यह कार्यशालाएँ हर महीने हर जगह नहीं हो सकती हैं। इसलिए आवश्यक है एक ऐसा माध्यम होना जिससे पूरे प्रदेश के शिक्षकों को प्रतिमाह कुछ नया सीखने को मिले।

मुझे यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि मिशन शिक्षण संवाद पिछले छह महीनों से एक पत्रिका निकाल रहा है। इसमें एक से एक शिक्षकोपयोगी स्तंभ हैं। न केवल पढ़ाने की बात होती है वरन बाल साहित्य की भी बात होती है। न केवल गतिविधियों की बात होती बल्कि उन शिक्षकों की भी बात होती है जिन्होंने प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अपना विद्यालय बदल दिया है, अन्य शिक्षकों ने क्या किया इससे प्रेरणा मिलती है। मैं मिशन शिक्षण संवाद पत्रिका के सातवें और 2019 के प्रथम अंक के सफल होने की शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

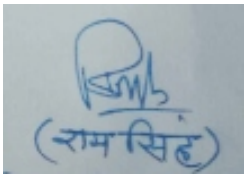

जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी
सिद्धार्थनगर

सम्पादकीय

नववर्ष के प्रथम माह में हम सब प्रवेश कर चुके है। जब भी कुछ नया होता है तो हम सबमें एक नयी ऊर्जा का संचार होता है। सूरज की पहली किरण मिलती है तो हम एक नई स्फूर्ति के साथ उठते हैं, कुछ नया करने की सोचते हैं। इस माह को भी हमें अपने अंदर नवीन उर्जा के परिचायक की दृष्टि से देखना है। हमें अपने अंदर कुछ नया, कुछ अनोखा उत्पन्न करना है।

हमारा नया उत्पन्न करना क्या होगा? कुछ ऐसा जिससे बच्चे कुछ नया सीख सकें क्योंकि एक शिक्षक की जिंदगी में पढ़ना पढ़ाना ही सब कुछ होता है। इसी को ध्यान में रखते हुए मिशन शिक्षण संवाद प्रतिमाह एक पत्रिका आप सबके समक्ष लेकर आता है जिसमें इसमें अनमोल रत्नों के बारे में होता है, नयी गतिविधियों के बारे में होता है, कुछ टीएलएम होते हैं, तो खेल के बारे में भी होता है।

आशा है कि पिछले अंकों की तरह जनवरी 2019 का अंक भी शिक्षकों व बच्चों के लिए उपयोगी साबित होगा। साथ ही क्या अच्छा था, किसमें संशोधन की आवश्यकता है? यह आप हमें लिखकर अवश्य भेजेंगे। मैं "शिक्षण संवाद" पत्रिका के जनवरी अंक के सफल होने की शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

आपका

विमल कुमार
पूर्व माध्यमिक विद्यालय अमराहट,
राजपुर, कानपुर देहात

अनुक्रमणिका

विषय वस्तु	पृष्ठ सं०
विचारशक्ति	7–11
अभतपूर्व रही बस्ती कार्यशाला	12–13
मिशन गीत	14
बेसिक शिक्षा के अनमोल रत्न	15–17
निन्दक नियरे राखिए	18
टी.एल.एम.संसार	19
इंग्लिश मीडियम डायरी	20–21
प्रेरक–प्रसंग	22
सद्विचार	23
बाल साहित्य	24
बच्चों का कोना	25
माह की सर्वश्रेष्ठ ब्लॉग पोस्ट	26–27
माह का मिशन	28–29
महिला अध्यापकों की चुनौतियां	30–31
कस्तूरबा विशेष	32
योग विशेष	33
खेल विशेष	34–35
महत्वपूर्ण दिवस	36
शिक्षण तकनीकी	37
मिशन उपस्थिति	38
मिशन शिक्षण संवाद और रामपुर	39–41

विचारशक्ति

बेहतर संवाद शिक्षण की बुनियाद

–डा0 मनोज कुमार वार्ष्णेय

शिक्षण संवाद

एक शिक्षक के समक्ष कक्षा से जुड़े कई बुनियादी प्रश्न होते हैं जैसे छात्र छात्राएँ नियमित आने हेतु किस प्रकार तत्पर हों? मेरी कक्षा बेहतर कैसे हो? कक्षा में सीखने–सिखाने का बेहतर माहौल कैसे बने? अधिकतम अधिगम कैसे हो? कक्षा शिक्षण बेहतर एवं प्रभावी कैसे हो?

विद्यालय व कक्षा से सम्बंधित इन सभी प्रश्नों के जवाब में एक बहुत बुनियादी उपाय नजर आता है, वो है, कक्षा में शिक्षक व छात्रों के मध्य बेहतर व प्रभावी संवाद। कक्षा में शिक्षक और बच्चों के बीच आपसी बातचीत का स्तर जितना अच्छा व आत्मीय होगा कक्षा का स्तर भी उतना ही बेहतर होगा। दूसरे अर्थों में हम कह सकते हैं कि कक्षा शिक्षण बेहतर संवाद का ही अन्य नाम है साथ ही यदि हम छात्र–छात्राओं से भावनात्मक रूप से जुड़ें एवं उन्हें जोडें तो वे सभी नियमित विद्यालय आने हेतु तत्पर होंगे इसके लिए उन्हें विद्यालय को उनके प्रथम परिवार के रूप में विकसित करना होगा। साथ ही हमें अभिभावकों एवं विद्यालय प्रबंध समिति से भी इसी प्रकार के संवाद को स्थापित करने की भी आवश्यकता है। यदि हम ऐसा कर सके तो निश्चित हम सफलता की ओर अग्रसर होंगे।

बेहतर संवाद हेतु आवश्यक बिन्दु

कक्षा में बच्चों और अध्यापक के बीच संवाद या बच्चों के मध्य आपसी संवाद या अन्य सम्बन्धित के भी मध्य बेहतर संवाद का अर्थ होता है कि संवाद में भाग लेने वाले सभी सहभागियों और पक्षों को अपनी बात कहने का समान अवसर प्राप्त हो दोनों पक्ष एक–दूसरे को सुनने हेतु तैयार हों। सभी अपनी बात बिना किसी भय के कह सकें, क्योंकि यदि संवाद में पद, आयु, लिंग, जाति–धर्म या अन्य किसी भी कारण से भय उत्पन्न होने की संभावना होने पर संवाद का स्तर बहुत ही निम्न हो जाता है एवं उसे लोकतांत्रिक भी नहीं कहा जा सकता। बालक यदि अपनी बात कहना चाहता है परन्तु किसी भय या संकोच के कारण से वह अपनी बात नहीं कह पाता तो इस तरह का अवरोध संवाद को एकतरफा और बहुत ही अलोकतांत्रिक बना देता है। इससे कक्षा का वातावरण नीरस और अप्रभावी हो जाता है। संवाद में इस बात पर भी ध्यान देने की आवश्यकता होती है कि संवाद में शामिल सहभागी हमेशा सरल व समझने योग्य भाषा का प्रयोग करें। सरल भाषा से तात्पर्य है सामान्य बोलचाल की भाषा जिसे सभी आसानी से समझ सकें व वक्ता अपनी बात कहते समय सहज और आत्मविश्वास से पूर्ण रहें। आपस में बात कर रहे दो व्यक्तियों का एक–दूसरे के प्रति भरपूर सम्मान, आदर एवं अपनापन भी होना चाहिए, अगर बात कर रहे दो लोग एक–दूसरे का सम्मान नहीं करेंगे तो बातचीत या संवाद कभी बेहतर हो ही नहीं सकता। सम्मान भी इस स्तर का की अगर सामने वाला कोई ऐसी बात कह रहा है, जो पहले वाले को पसंद नहीं है फिर भी पहले वाला सामने वाले को सुन सके। पसंद ना होने पर भी सुनने की क्षमता होना। घनघोर असहमति होने पर भी सुनने का साहस रखना और बाद में अपनी बात प्रमाण के साथ सहजता से रखना और असहमति पर विरोध करना। ताकि संवाद की प्रक्रिया को जारी रखा जा सके।

डा0 मनोज कुमार वार्ष्णेय,
प्रवक्ता,
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान आगरा।

विचारशक्ति

ढर्रे पर लौटती बेसिक शिक्षा

—अवनीन्द्र सिंह जादौन

शिक्षण संवाद

प्राथमिक शिक्षा देश के विकास से जुड़ा सबसे महत्वपूर्ण मुद्दा है। बिना शिक्षित किये आप किसी व्यक्ति से देश की प्रगति में सक्रिय सहयोग की अपेक्षा ही नहीं कर सकते हैं। अनपढ़ और आर्थिक रूप से कमजोर तबके के बेहतर जीवन के लिए ही सरकार को टैक्स से प्राप्त धन का बड़ा हिस्सा खर्च करना होता है। सबसे बड़ी जिम्मेदारी इन परिवारों की आगे आने वाली पीढ़ी को शिक्षित करते हुए आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने की है इसलिए सरकारी प्राथमिक स्कूलों के परिणाम पर राष्ट्र की प्रगति निर्भर करती है।

प्राथमिक शिक्षा के मामले में उत्तर प्रदेश की स्थिति अन्य राज्यों से कोई भिन्न नहीं रही है। लेकिन इस प्रदेश में विगत 2 वर्षों से अचानक प्राथमिक शिक्षा में काफी कुछ सकारात्मक सुधार देखने को मिला है। प्रदेश के शिक्षा विभाग के वरिष्ठ अधिकारी, कुछ सकारात्मक सोच वाले प्रयोगधर्मी जनपदीय शिक्षा अधिकारियों और युवा ऊर्जावान शिक्षकों के प्रयोगों से बेसिक शिक्षा के प्रति लोगों की परंपरागत नकारात्मक सोच और जड़ता के टूटने की शुरूआत हो चुकी है। वर्षों से सफेद रंग में पुते हरी पट्टी वाले प्राथमिक विद्यालयों और लाल पट्टी वाले पूर्व माध्यमिक विद्यालयों की दीवारों को अचानक रंग–बिरंगा करवाकर अध्यापकों ने संदेश देना शुरू कर दिया है कि हम बंधन तोड़कर प्राथमिक शिक्षा के प्रति लोगों की सोच को बदलकर ही दम लेंगे। सैकड़ों विद्यालयों में अध्यापक स्वयं के खर्च द्वारा खरीदे गए प्रोजेक्टर और मल्टीमीडिया उपकरणों का प्रयोग कर बच्चों को स्मार्ट क्लास का सुखद अनुभव करा रहे हैं। प्रदेश के हजारों स्कूलों में अब बच्चे आईकार्ड और टाई बेल्ट के साथ नजर आने लगे हैं। सरकारी स्कूल के छात्र अंकुरम जैसे एन जी ओ के मंच पर कान्वेंट के छात्रों के साथ टक्कर लेकर जीतते नजर आ रहे हैं। हिंदी ओलंपियाड में राजधानी के छात्र प्रदेश की मेरिट में निजी विद्यालयों के छात्रों से ऊँची रैंक लाकर बेसिक के अध्यापकों के प्रयास और छात्रों की क्षमता को साबित कर रहे हैं।

सकारात्मकता की इस पहल में सबसे अधिक किसी का योगदान रहा है तो वह है सोशल मीडिया का।प्राइमरी का मास्टर के सूचना ब्रॉडकास्टिंग पोर्टल से अध्यापकों को जोड़ने से शुरू हुए अभियान और अध्यापक विमल कुमार द्वारा 2016 में बनाये गए मिशन शिक्षण संवाद समूह ने उत्तर प्रदेश के अध्यापकों की सोच को बदलने में क्रांतिकारी काम किया है। 100 से अधिक व्हाट्सएप समूह और फेसबुक ग्रुप में जुड़े हजारों शिक्षक एक दूसरे से अपनी गतिविधियाँ साझा करके एक ऐसे शैक्षिक वातावरण का निर्माण करने में सफल होते दिख रहे हैं जिसने समग्र समाज को अपनी तरफ आकर्षित करते हुए उन्हें सरकारी अध्यापकों के कार्यों पर वाह कहने को मजबूर किया है। मुझे याद है कि 5 वर्ष पहले तक शायद ही किसी अखबार ने किसी प्राथमिक विद्यालय के कार्यों पर कोई स्टोरी को छापा हो पर अब लगभग सभी समाचार पत्रों में सप्ताह में एक दो बार प्राथमिक में हो रहे अच्छे कार्यों को प्रमुखता से छापा जा रहा है। अखबार देखने से पता चलता है कि किस तरह अध्यापकों ने निजी और सामुदायिक सहभागिता से कुछ स्कूलों के भौतिक परिवेश और

शैक्षिक स्थिति को श्रेष्ठतम स्तर पर पहुँचा दिया। प्रदेश में कई विद्यालय तो ऐसी स्थिति में हैं जहाँ पर प्रवेश हेतु छात्रों की लाइन लगी है और संसाधन सीमित होने से प्रवेश बंद करने पड़े। कुछ अध्यापकों ने अपने प्रयासों से दो वर्षों में छात्र संख्या में 4 गुना तक इजाफा किया है। कई शिक्षकों के नवाचारी प्रयोगों ने अच्छे–अच्छे शिक्षाविदों को सोचने को मजबूर कर दिया। शिक्षा विभाग ने भी ब्रॉडकास्टिंग की ताकत को समझकर विभागीय वेबसाइट, यू ट्यूब चैनल, ट्विटर एकाउंट आदि के माध्यम से अच्छे कार्यों को साझा करना शुरू किया तो रचनात्मक अध्यापकों में अपनी क्रियाशीलता दिखाने और बेहतर कार्य करने की ललक पहले से कई गुना बढ़ गयी।

सरकारी स्कूलों में अध्यापन उतना आसान नहीं है जितना दिखता है। इन स्कूलों में 90 प्रतिशत से अधिक छात्र उस वर्ग से आते हैं जिनका पूरा परिवार मेहनत मजदूरी करके बमुश्किल अपना जीवनयापन करता है। ऐसे में उन्हें स्कूल लाकर वर्ष पर्यन्त रोके रख पाना व्यवहारिक रूप से काफी कठिन है। परंतु उत्तर प्रदेश की युवा पीढ़ी के शिक्षक अब हारने को तैयार नहीं हैं। सोशल मीडिया ने पूरे प्रदेश के शिक्षकों के लिए पठन–पाठन की बात के लिए एक मंच दिया और इस मंच की बातों ने उत्तर प्रदेश की बेसिक शिक्षा को एक नयी उम्मीद। सितंबर 2016 में टीचर्स क्लब ने प्रदेश भर के ऐसे कुछ प्रयोगधर्मी शिक्षकों को एक मंच पर लाकर उनके अनुभव साझा करने का प्रथम प्रयास किया तो इन अध्यापकों के कार्यों की बात पूरे उत्तर प्रदेश में गूँज उठी। बेसिक शिक्षा और खुद की पहचान को बदलने की दौड़ में हजारों शिक्षक व्हाट्सएप्प पर शिक्षा के सबसे बड़े मंच मिशन शिक्षण संवाद से जुड़ते चले गए।

सबसे सकारात्मक पहलू यह है कि शिक्षकों के इन प्रयासों को शिक्षा विभाग के वरिष्ठ अधिकारी लगातार देख रहे हैं और अच्छे प्रयोगों को अन्य विद्यालयों में लागू भी करवा रहे हैं। शायद प्रदेश में पहली बार ऐसा हो रहा है कि विभाग के सर्वोच्च अधिकारी स्वयं शिक्षा सुधार की प्रक्रिया में शिक्षकों के साथ सीधे शामिल होकर संवाद कर रहे हैं और अपने ट्विटर एकाउंट से अच्छे कार्यों को प्रोत्साहित भी कर रहे हैं। हालांकि अभी यह इन प्रयासों में शामिल शिक्षकों और विद्यालयों की संख्या सीमित है पर जिस तरह से एक सामूहिक प्रयास शुरू हुआ है और शिक्षकों ने उसमे शामिल होने की रुचि दिखाई है उससे भविष्य में एक सकारात्मक सुधार की उम्मीद बनती दिखाई पड़ रही है। पर अभी एक लंबा रास्ता तय करना बाकि है। कुछ अध्यापकों की संख्या को अधिकांश अध्यापकों की संख्या में परिवर्तित करना जरूरी है। शिक्षा के लिए अध्यापकों का शिक्षा अधिकारियों से लगातार शैक्षिक संवाद जरूरी है साथ ही विद्यालय स्तर की समस्याओं का त्वरित निदान भी अपेक्षित है। समाज के प्रबुद्ध नागरिकों का भी इस मुहिम में साथ आना जरूरी है। फिर भी शुरुआत की प्रगति पर संतोष तो जताया ही जा सकता है।

अवनीन्द्र सिंह जादौन

परिचय

टीचर्स क्लब उत्तर प्रदेश के महामंत्री एवं मिशन शिक्षण संवाद के कोऑर्डिनेटर के बतौर 5 वर्षों से शिक्षा के क्षेत्र में सामुदायिक सहभगिता के कार्यक्रमों में सक्रिय।

शैक्षिक आलेख लेखन में रुचि। कुछ आलेख पत्रिकाओं और समाचार पत्रों में प्रकाशित हुए हैं।

'जन–गण–मन'– एक स्वतंत्र विवेचन

—डॉ0 प्रवीणा दीक्षित

प्रायः हम देश और राष्ट्र दोनों को समानार्थक शब्दों के रूप में स्वीकार करते हैं किंतु इन दोनों के अर्थ भिन्न–भिन्न हैं। देश शब्द का अर्थ है–––'मात्र भू भाग या स्थान होता है' जबकि राष्ट्र––'वह शब्द है जो अपने सम्पूर्ण एकत्व, सार्वभौमिकत्व एवं स्वाधीनता को व्यक्त करता है।'

स्वाधीनता सूर्योदय के साथ ही भारत ने स्वतंत्र देश के स्थान पर स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में अपने नेत्र खोले। राष्ट्र के रूप में इसके स्वरूप को और अधिक दीप्तिमान करने के लिए आवश्यक हो गया कि हमारे देश का एक निजी संविधान हो, राष्ट्रीय मुद्रा हो, राष्ट्र ध्वज हो और राष्ट्र ध्वज के सम्मान के लिए गाए जाने वाला राष्ट्रगान हो। इसी अपरिहार्य आवश्यकता के निवारणार्थ भारतीय मनीषियों व बुद्धि जीवियों ने संविधान सभा के माध्यम से 24 जनवरी सन् 1950 को गुरुदेव रविन्द्रनाथ टैगोर कृत 'जन–मन–गण' को राष्ट्रगान के रूप में स्वीकृति प्रदान की गई। राष्ट्र गान 'जन–मन–गण' की पूर्व पीठिका पर यद्यपि कुछ आपत्तियों की छाया भी है तथापि इसमें सन्निहित भावों को राष्ट्र सन्दर्भों से जोड़कर देखने में इसकी भास्वरता पर कोई अंतर नहीं पड़ता है।

वस्तुतः यह गान ब्रिटिशकालीन सत्ता के प्रति कभी कृतज्ञता का ज्ञापन करता था और जार्ज पंचम के सम्मान में प्रशस्ति के रूप में लिखा गया था क्योंकि तत्कालीन सन्दर्भ में ब्रिटिश सत्ता ही हमारी नियामक सत्ता थी। बदलते सन्दर्भ में इसे विश्व मंच पर उभरते हुए स्वतंत्र सार्वभौमिक भारतीय सत्ता के समादृत राष्ट्र गान के रूप में स्वीकार किया गया। गुरुदेव रविन्द्रनाथ टैगोर द्वारा रचित 'जन–गण–मन' के मूल रूप में पाँच पद सम्मिलित हैं किन्तु भारतीय मनीषियों ने केवल उसी पद का चयन किया जिसमें हमारी संस्कृति, हमारी राष्ट्रीय अखंडता की स्पष्ट झलक है।

आज के सन्दर्भ में देश का आम व्यक्ति ही अधिनायकत्व के रूप में प्रतिष्ठित है। भारतीय संविधान को हमने स्वयं निर्मित किया, अंगीकृत कर आत्मार्पित किया उसी तरह अधिनायक के रूप में जन सामान्य को महत्ता, गरिमा और प्रतिष्ठा प्राप्त है। यह तथ्य हमें राष्ट्र गान की पंक्तियों में सन्निहित अर्थ से ध्वनित होता है।

आइए! कुछ और सोचने से पूर्व हम अपने ' राष्ट्र गान' के सही अर्थ को भी समझने का प्रयास करें।

1– कवि के शब्दों में–––हे! भारतीय समूहों के हृदय सम्राट, भारतीय भाग्य के नियामक सामान्य व्यक्ति(जन साधारण) तुम्हारी जय हो।

हे जनसाधारण! आज जो ये पंजाब, सिंधु, गुजरात, महाराष्ट्र, द्राविड़, उत्कल, बंगाल जैसे भारतीय प्रांत हैं तथा भारत के दोनों श्रेष्ठ पर्वत 'हिमालय और विध्यांचल' हैं। इस भूभाग पर गंगा–यमुना जैसी पवित्र नदियाँ हैं। सागर की उछलतीं लहरें हैं। वे समवेत स्वरों में तुम्हारे ही नाम का जाप कर रहीं हैं और अपनी निरंतरता के लिए राष्ट्र के हे जन सामान्य पुरुष! तुमसे आशीर्वाद की कामना रखतीं हैं। सर्वथा तुम्हारे ही जय की गाथाओं का गान करना चाहतीं हैं। ओ जन सामान्य! तुम्हीं भारत के भाग्य का निर्माण करनेवाले हो।

तुम्हीं सम्पूर्ण भारतीय गणों के कल्याण में समर्थ हो।

तुम्हारी जय हो... तुम्हारी जय हो। तुम सर्वदा पुनः–पुनः जय(नमन) के योग्य हो।

राष्ट्र गान के रूप में स्वीकृत इस पद का अनुशीलन करने पर हमारे सामने कुछ मुख्य बिंदु उभर कर आ रहे हैं जो इस प्रकार हैं–

हमारा 'जन–गण–मन' स्वतंत्र, सार्वभौमिक भारतीय गणतंत्र के नियामक जन सामान्य की अर्चना है जिसमें यह दर्शाया गया है कि बदलते संदर्भों में देश की जनता अपने प्रतिनिधियों द्वारा स्वयं अपने पर शासन करने की क्षमता वाली हो गयी है।

2– भारतीय प्रांत पंजाब, सिंधु, गुजरात, महाराष्ट्र, द्राविड़, उत्कल, बंग आदि प्रांत भारतीय गणराज्य में उसी तरह आबद्ध हैं जैसे किसी हार में विविध प्रकार के हीरे–मोती आदि अनुस्यूत होते हैं अर्थात यह राष्ट्र गान हमें 'भावनात्मक एकता' की प्रतिष्ठा करता दिखाई पड़ता है।

3–हिमालय भारत माँ का मुकुट स्वीकारा गया है और विंध्याचल को उसकी करधनी माना गया है। हमारी भारत माता के वक्ष पर गंगा–यमुना हृदय हार के रूप में स्वीकारी गयी हैं। रत्नाकर भारत माता के चरणों को पखार कर अपने को धन्य मानता है।

''हिमालय मुकुट शीश श्रृंगार,
हृदय गंगा–यमुना का हार।''

अतः राष्ट्र गान हमें हमारी संस्कृति से साक्षात्कार कराता है ये भाव भरता है–

'जो हुआ धरा में पूजनीय, उसका पूजन करना होगा।
जो हुआ धरा में वंदनीय, उसका वंदन करना होगा।'

4–राष्ट्र गान के अधिनायक के रूप में अधिकृत जन सामान्य भारत के कल्याण का हेतु है। डॉ0 राम कुमार वर्मा ने भारत के सामान्य व्यक्ति के लिए लिखा है–

''तुम जन–गण–मन अधिनायक हो,
तुम हँसो कि फले–फूले देश।
आओ सिंहासन पर बैठो,
यह राज्य तुम्हारा है अशेष।''

5–राष्ट्र गान में बार–बार 'जय' पद का प्रयोग यह दर्शाता है कि कवि अपने हृदय की आंतरिक गहराइयों तक उस 'सामान्य व्यक्ति' के प्रति प्रणत होकर अपनी श्रद्धा व्यक्त कर रहा है।

6–सम्पूर्ण राष्ट्र गान पर और वर्तमान सन्दर्भों पर ध्यान देने पर हमारे सामने जो एक निर्योग्यता उभरती है वह यह है कि भारतीय प्रांतों में आज 'सिंधु प्रांत' सम्मिलित नहीं है किंतु हम आज भी इस शब्द का प्रयोग कर रहे हैं। कवि समाज का ब्रह्मा होता है । हो सकता है कि कभी ये 'सिंध' पुनः हममें मिलकर राष्ट्र गान में अपनी उपस्थिति दर्ज कराए।

आज के परिवेश में केवल इतना ही कहा जा सकता है कि हम 'जन–गण–मन' को स्वतंत्र सर्वप्रभुत्व सम्पन्न भारतीय गणराज्य के समादृत राष्ट्र के रूप में ही स्वीकार करें और इसके सम्मान को अक्षुण्ण रखें।

''मान राष्ट्र मान के बगैर नहीं है,
गान राष्ट्र गान के बगैर नहीं है।''

डॉ0 प्रवीणा दीक्षित,
हिन्दी शिक्षिका,
के.जी.बी.वी. नगर क्षेत्र,
जनपद–कासगंज।

अभूतपूर्व रही बस्ती की मिशन शिक्षण संवाद शैक्षिक गुणवत्ता उन्नयन कार्यशाला तथा टीएलएम व नवाचार प्रदर्शनी

—डॉ0 सर्वेष्ट मिश्र

बस्ती में बेसिक शिक्षा विभाग द्वारा राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त शिक्षक डॉ0 सर्वेष्ट मिश्र के नेतृत्व में 16 नवम्बर को शहर के होटल सिमरन पॉइराडाइज सभागार में मिशन शिक्षण संवाद शैक्षिक गुणवत्ता उन्नयन कार्यशाला का आयोजन 16 नवम्बर को किया गया। कार्यशाला का उद्घाटन डीएम डॉ0 राजशेखर जी ने किया। कार्यशाला में जनपद के परिषदीय प्राथमिक व उच्च प्राथमिक विद्यालयों मे शैक्षिक एवं भौतिक गुणवत्ता उन्नयन व नामांकन में वृद्धि हेतु शिक्षकों द्वारा किये जा रहे प्रयासों का प्रस्तुतीकरण शिक्षकों द्वारा किया गया। कार्यशाला का संयोजन राष्ट्रीय शिक्षक सम्मान प्राप्त शिक्षक डॉ0 सर्वेष्ट मिश्र द्वारा किया गया।

इस अवसर पर जिलाधिकारी डॉ0 राजशेखर ने कहा कि शिक्षक समाज का सबसे गौरवशाली व सम्मानित पद है। उन्होंने कहा कि समस्याएँ हर क्षेत्र में है लेकिन बार बार उनका जिक्र करने से नहीं बल्कि उनके निस्तारण करने से काम आसान होगा। उन्होंने राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त शिक्षक डॉ0 सर्वेष्ट मिश्र के विद्यालय मूड़घाट और उनके कार्यों की प्रशंसा करते हुए शिक्षकों को उनसे प्रेरणा लेने की बात कही। उन्होंने कहा कि शिक्षक को अपनी अंतरात्मा और ईश्वर को ध्यान में रखकर अपना कार्य ईमानदारी से करना चाहिए। विशिष्ट अतिथि सहायक शिक्षा निदेशक डॉ0 एस0 पी0 त्रिपाठी ने कहा कि शिक्षकों द्वारा वर्तमान में जनसहयोग से स्कूलों का विकास और नवाचारों का प्रयोग किया जा रहा है जो काफी सुखद है। उन्होंने नवाचारी शिक्षको के कार्यों की प्रशंसा की। जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी अरुण कुमार ने कहा कि जनपद में शिक्षकों ने अपने कार्यों से देश प्रदेश में जनपद और अपने स्कूल का नाम रोशन किया है। उन्होंने जिलाधिकारी द्वारा भविष्य में ब्लॉकवार नवाचार एवं टीएलएम प्रदर्शनी आयोजित कर शिक्षकों को सम्मानित करने की बात कही। उन्होंने जिलाधिकारी डॉ0 राजशेखर जी के दिशा निर्देशन में आगे भी इस तरह कार्यशाला आयोजन की बात कही। कार्यक्रम के संयोजक डॉ0 सर्वेष्ट मिश्र ने कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए अपने स्कूल का पॉवर पॉइंट प्रस्तुतिकरण किया।

कार्यशाला में जनपद के आदर्श प्राथमिक विद्यालय मूड़घाट के प्रधानाध्यापक डॉ0 सर्वेष्ट मिश्र द्वारा विद्यालय विकास के विविध पक्षों पर अपने विचार प्रस्तुत किए गये। उनके द्वारा कैसे जनसहयोग एवं व्यक्तिगत प्रयास से एक मॉडल विद्यालय विकसित किया, इसका भी पावर प्वाइंट प्रस्तुतीकरण किया। राज्य पुरस्कार प्राप्त शिक्षक इकबाल ने अपने विद्यालय विकास योजना के बारे में प्रस्तुतिकरण किया।

कार्यशाला शिक्षण की विभिन्न नवीनतम तकनीकों जैसे सूचना तकनीक के माध्यम से शिक्षण, शिक्षण अधिगम, क्यू आर कोड के माध्यम से शिक्षण पर रमेश विश्वकर्मा, ग्रेडेड लर्निंग पर वंशराज, लर्निंग आउटकम्स सुभेन्दु सिंह व शिक्षा का अधिकार अधिनियम पर राजेश मिश्र व टीएलएम व गतिविधि आधारित शिक्षा पर श्रुति त्रिपाठी ने पॉवर पॉइंट प्रस्तुतीकरण किया। कार्यक्रम में शिक्षा के क्षेत्र में बेहतर कार्य कर रही संस्था आई केयर के यूपी द्वारा शिक्षा में उनके अभियान अंकुरम के प्रयासों की जानकारी दी। कार्यक्रम में कस्तूरबा विद्यालय साउंघाट, यूपीएस सिरसिया और कोटवा के बच्चो द्वारा पीटी, जिम्नास्ट, रंगोली व संस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गए। जिलाधिकारी व अतिथियों द्वारा जनपद के विभिन्न विकास खण्डों के नवाचारी शिक्षको द्वारा लगाए गए टीएलएम प्रदर्शनी का निरीक्षण किया गया।

कार्यक्रम में जिलाधिकारी ने इस वर्ष जनपद के राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार प्राप्त शिक्षक डॉ0 सर्वेष्ट मिश्र व राज्य शिक्षक पुरस्कार प्राप्त शिक्षक मोहम्मद इकबाल व स्वच्छ विद्यालय पुरस्कार प्राप्त शिक्षकों को सम्मानित किया।

कार्यशाला में बेसिक शिक्षा विभाग द्वारा संचालित योजनाओं तथा शिक्षकों द्वारा मिशन शिक्षण संवाद आई सी टी टूल्स, टीएलएम, नवाचार, आर्ट एवम क्राफ्ट, विज्ञान मॉडलों की प्रदर्शनी और बच्चों द्वारा प्रस्तुत कार्यक्रम लोगों के आकर्षण का केन्द्र रहा।

कार्यक्रम के अंत मे बीएसए ने बेहतर कार्य करने वाले शिक्षकों, खण्ड शिक्षा अधिकारियों व बच्चों को भी सम्मानित किया। कार्यक्रम में बीईओ इंद्रजीत ओझा, ध्रुव जायसवाल, अनिल मिश्र, राम बहादुर वर्मा, कपिलदेव द्विवेदी, अखिलेश सिंह, श्याम बिहारी, अंजनी कुमार, चन्द्रभान पांडे, राम चन्द्र यादव, सुनील त्रिपाठी, अभिनव मणि, अमित मिश्र, डॉ0 अवध नारायण मिश्र, आलम, प्रभात शुक्ल, शिक्षक नेता चन्द्रिका सिंह, दुर्गेश, अभय यादव, प्रमोद त्रिपाठी योगेश सिंह अमर चन्द, बृजेश गुप्ता, माधुरी त्रिपाठी, पंकज सिंह, पुष्पलता पांडेय, अमरेंद्र सिंह , अंगद सिंह, कंचनमाला त्रिपाठी उर्मिला मिश्र सहित 600 से अधिक शिक्षक उपस्थित रहे।

□□□

प्रस्तुति
टीम मिशन शिक्षण संवाद बस्ती

मिशन गीत

मिशन शिक्षण संवाद
है नये युग की शुरुआत

मिशन शिक्षण संवाद
है नये युग की शुरुआत
मिटाने शिक्षा का अंधियारा
जगाने उम्मीदों का उजियारा
कुछ नए तरीके लेकर आया
बच्चों को प्यार से सिखाया

किया शिक्षकों का सम्मान
जो गढ़ते नित नये आयाम
बढ़ा मनोबल हाथ बढ़ाता
ये मिशन कुछ नया सिखाता
खेल–खेल में सीखते जाते
बच्चे शिक्षक घुलमिल जाते

मिशन शिक्षण संवाद
बदले सोच बदले समाज
कुछ सोचा समझा जाना
नया सवेरा हो अब है ठाना
किया शुरु जिसने उनको नमन
बढे कारवां साथी हाथ बढ़ाना।।

□□□

राजीव कुमार (प्र0 अ0)
प्रा0 वि0 बहादुरपुर राजपूत
वि0 खण्ड कुंदरकी
जिला मुरादाबाद

बेसिक शिक्षा के अनमोल रतन

शंकर सिंह अधिकारी
राजकीय प्राथमिक विद्यालय गड्यूडा नवीन,
पाटी, चम्पावत, उत्तराखंड

https://shikshansamvad.blogspot.com/2018/11/blog-post_17.html

छाया प्रकाश (प्रधानाध्यापक)
प्राथमिक विद्यालय गिरिया खालसा,
चायल, कौशाम्बी

https://shikshansamvad.blogspot.com/2018/11/blog-post_60.html

नरेंद्र सैनी (प्रधानाध्यापक)
प्राथमिक विद्यालय ठाकुरद्वारा,
विकासखंड– चमरौआ, रामपुर

https://shikshansamvad.blogspot.com/2018/11/blog-post_20.html

रीता सेमवाल (प्र०अ०)
प्रा०वि० नीलकण्ठ,
जिला– पौड़ी गढवाल उत्तराखण्ड

https://shikshansamvad.blogspot.com/2018/11/blog-post_56.html

प्रतिमा मिश्रा (प्रभारी प्रधानाध्यापिका)
पू०मा०वि०–विश्वनाथपुर,
ब्रह्मपुर, गोरखपुर

https://shikshansamvad.blogspot.com/2018/11/blog-post_34.html

पूर्णिमा मिश्रा
प्राथमिक विद्यालय सुआगाड़ा द्वितीय
वि०क्षे०– लखीमपुर, जिला–खीरी

https://shikshansamvad.blogspot.com/2018/12/blog-post_42.html

माधव सिंह नेगी (प्र०अ०)
रा०प्रा०वि० जैली, ब्लॉक–जखोली
जिला– रुद्रप्रयाग उत्तराखण्ड

https://shikshansamvad.blogspot.com/2018/12/blog-post_23.html

निन्दक नियरे राखिए

शिक्षा का हाल बेहाल

—राजू एस यादव

शिक्षण संवाद

सब लोग हैं खामोश, यही सोच रहे हैं
सच बोलेंगे तभी, जब सच का दाम बढ़ेगा।।

पिछले 5 वर्षों के दौरान देश के करीब 250 विद्यालयों और 10 विश्वविद्यालयों में विभिन्न समय पर व्याख्यान के दौरान मेरा अनुभव कुछ अच्छा नहीं रहा।

1. सरकारी संस्थाओं में काम करने वाले शिक्षक जो कई चरण की परीक्षा पास कर नौकरी में आते हैं वो सिस्टम की कार्यप्रणाली में अपनी ज्ञान का दम्भ नहीं दम तोड़ देते हैं। यहाँ शिक्षक को अनर्गल प्रताड़ित किया जाता है और सिर्फ कागजों के पुलिंदा में इस कदर उलझा दिया जाता है कि वो खुद शिक्षा के वास्तविक स्वरूप और शिक्षक के मायने भूल जाते हं।

2. प्राइवेट स्कूल अधिकांश मुनाफा प्रणाली से चलता है और कुछेक स्कूलों को छोड़ दें तो यहाँ ऐसे व्यक्ति की भर्ती होती है जो जीवन से निराश हो अपना शोषण करवाने आते हैं। यहाँ काम के अनुरूप वेतन और अन्य सहूलियतों का अभाव होता है और सब रिंग मास्टर के कोड़े पर काम करने वाले मुलाजिम बनकर काम करते हैं।

दोनों ही स्थिति में नुकसान शिक्षा का ही है। शिक्षा का अर्थ कतई कागजी पुलिंदों में उलझना या रिंग मास्टर के इशारे पर नाचना नहीं है। जब तक शिक्षक स्वायत्त होकर निर्णय लेने की क्षमता को नही पाएँगे शिक्षा पर और आधुनिक शैक्षिक प्रणाली पर हम रोयेंगे।

मंजुल भार्गव ने सही कहा – भारत में शिक्षा प्रणाली रोबोटिक है।

विश्वगुरु भारत जिसकी स्थिति वैदिक काल में ज्ञान के सिरमौर के रूप में थी आज भी जब जीरो दिया मेरे भारत ने से आगे नही बढ़ पाया।

न तो शैक्षिक संस्थान नई परिकल्पना के साथ कोई काम करना चाहता है न ही कोई एजेंसी स्वायत्तता की बात करता है और शिक्षकों ने इसे अपनी नियति मान इन तथाकथित शिक्षा के ठेकेदार के सामने बेबस हो आत्मसमर्पण कर शिक्षा का सत्यानाश कर दिया है।

गलत बातों को खामोशी से सुनना और हामी भर देना
बहुत ही फायदे है इसमें, मगर अच्छा नही लगता। —जावेद अख्तर

□□□

राजू एस यादव
जिला विज्ञान समन्वयक जनपद– सम्भल
सहायक अध्यापक
पूर्व माध्यमिक विद्यालय राजथल, बदायूँ

मैजिकल टेबल्स टीएलएम

रुचि श्रीवास्तव

मैजिकल टेबल्स एक ऐसा टीएलएम है जिसकी सहायता से हम 2 से लेकर 99 तक का पहाड़ा बेहद सरल, रोचक तथा आसान विधि से लिख सकते हैं।

बनाने की विधि :

एक कार्डबोर्ड लेकर उसे ब्लैक वेल्वेट पेपर से कवर कर लें। अब दो चार्ट पेपर्स लेकर उसकी 20 स्ट्रिप्स काट लें। इन स्ट्रिप्स पर 1 से लेकर 9 तक का पहाड़ा लिखकर 2 सेट्स तैयार कर लें। अंतिम स्ट्रिप पूरी 0 की रहेगी। अब स्ट्रिप्स के दोनों सेट्स चित्रानुसार कार्डबोर्ड पर टाई कर लें। "+" तथा "=" का चिह्न लगा दें। "Magical Tables" लिखकर कार्डबोर्ड को सजा लें। आपका मैजिकल टेबल्स टीएलएम तैयार है।

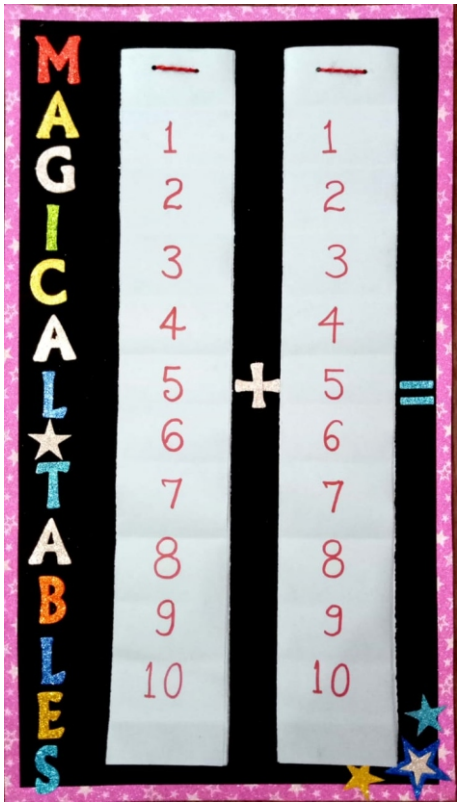

https://youtu.be/LFJsCRwNLZg

कार्यविधि :

मान लीजिए कि हमें 21 का टेबल लिखना है तो पहली स्ट्रिप पर 2 का टेबल तथा दूसरी पर 1 का टेबल खोलें । अब इस प्रकार 21 का टेबल लिखें:

2	1	= 21
4	2	= 42
6	3	= 63
8	4	= 84
10	5	= 105
12	6	= 126
14	7	= 147
16	8	= 168
18	9	= 189
20	10	= 210

ध्यान रखें जहाँ पर दोनों टेबल में दो अंक आयें वहाँ पर दूसरे टेबल का दहाई अंक पहले टेबल के अंकों में जोड़ देना है। इसी प्रकार हम अन्य टेबल्स लिख सकते हैं।

मैजिकल टेबल्स टीएलएम के लाभ :

1. बच्चों में पहाड़ा सीखने के प्रति रुचि बढ़ेगी।
2. बच्चों को लिखते लिखते पहाड़ा याद भी हो जायेगा।
3. जोड़ने का अभ्यास भी साथ साथ होता रहेगा।
4. पहाड़ा याद करने का भय दूर होगा।

प्रस्तुतिकर्ता :
रुचि श्रीवास्तव
सहायक अध्यापक
उच्च प्राथमिक विद्यालय सरायबन्दी,
ब्लॉक बिरनों, जनपद गाजीपुर ।

English Medium Diary

Pronunciations of letter "C"

Chhavi Agrawal

आजकल एक जोक काफी वायरल है ''अंग्रेजी के C से हुआ सरदर्द''

उसमें एक गाँव की दुल्हन अपने पति से अंग्रेजी भाषा सीख रही होती है लेकिन वह C से आगे नहीं बढ़ पाती है क्योंकि उसे समझ में नहीं आ रहा था कि C को कभी क तो कभी च तो कभी स क्यों बोला जाता है?

यही समस्या हमारे गाँव के स्कूलों में बच्चों के साथ भी होती है जब हम अलग–अलग जगहों पर अल्फाबेट्स का उच्चारण अलग–अलग तरीके से करते हैं।

एक बार मैं अपने बच्चों को SCHOOL की स्पेलिंग बता रही थी। बच्चे बोले मैम इसमें C को क क्यों बोल रहे हैं जबकि SCIENCE में तो हम उसे स की तरह पढ़ते हैं। तब मैंने उन्हें यह कहकर समझाया कि किसी दिन इस पर विस्तार से चर्चा करेंगे, अभी के लिए बस याद कर लो। तभी मुझे यह पोस्ट लिखने का विचार आया था जिससे मैं अपने जैसे अन्य शिक्षकों की दुविधा को आसान करने में कुछ सहयोग कर सकूँ।

हमारी हिंदी की तरह अंग्रेजी सीधी सादी नहीं है इसमें काफी twist & turns हैं जो पता हों तो अंग्रेजी भाषा काफी interesting हो जाती है, वरना तो टेढ़ी खीर।

इसलिए साथियों आज हम कुछ खास alphabets पर बात करेंगे जिनका उच्चारण words में भिन्न–भिन्न होता है।

आइये सबसे पहले शुरुवात C से ही करते हैं।

Rule 1

C अगर e, i, y के पहले जुड़ा हो तो उसका उच्चारण स की तरह होगा

उदाहरण : CENTER (सेंटर), FANCY (फैंसी), CITY (सिटी), PEACE (पीस)

Rule 2

C अगर a, o, u या किसी भी consonant के पहले जुड़ा हो तो उसका उच्चारण क की तरह होगा।

जैसे – CAT(कैट), CAMERA(कैमरा), CALL(कॉल),COW(काऊ), COME(कम), CURTAIN(कर्टेन), CLAP(क्लैप), CROSS(क्रॉस) etc.

C अगर word के end में हो तो भी उसका उच्चारण क होगा

जैसे–CHIC (चिक), PICNIC(पिकनिक),TUNIC(ट्यूनिक),ARITHMETIC(रिथमेटिक)

Rule 3

(Exception of rule 2)
जब C, H के साथ हो और उसके बाद कोई VOWEL हो तो C का उच्चारण च होगा
जैसे– CHAIN (चेन), CHALK(चाक), CHILDREN(चिल्ड्रन),
CHOWMIN (चाऊमीन)
CHURCH (चर्च), MATCH(मैच) etc.

C जब H के साथ हो और शब्द के End में हो तो C का उच्चारण च होगा
जैसे– TEACH(टीच) PITCH(पिच)

Rule 4
C का उच्चारण 'श' की तरह भी होता है ज्यादातर adjectives के केस में ऐसा होता है।
जैसे - SPECIAL (स्पेशल)
SOCIAL (सोशल)

In short we can summarize the thumb rule i.e.
Except for Ci, Ce, and Cy
C is pronounced as 'क' with the exception of 'च' offcoarse-

Review

How to pronounce CIRCUS, CYCLE
You can notice 2 C's in these words first C is pronounced as I and second is pronounced as d.

Next post में हम G के pronounciation पर चर्चा करेंगे।

□□□

Chhavi Agrawal
Assistant Teacher
English Medium Primary school Banpurwa
Block-Kashi Vidya Peeth
District-Varansi

प्रेरक प्रसंग

नेता जी सुभाषचन्द्र बोस

शिक्षण संवाद

सुभाष चन्द्र बोस का जिक्र होते ही मन मस्तिष्क में एक ऐसे व्यक्ति की छवि आ जाती है जो कि अपनी शर्तों पर जीने वाला हो और देश के सम्मान की रक्षा के लिये प्राणों की आहुति देने से न डरे। स्वयं के हौसले से एक बड़े कारवां का निर्माण कर अपने लक्ष्य की प्राप्ति करने में सक्षम हो।

एक बार की बात है जब बचपन में नेताजी सुभाषचंद्र बोस स्कूल में पढ़ा करते थे। बचपन से ही वे बहुत होशियार थे और सारे विषयों में उनके बहुत अच्छे अंक आते थे, लेकिन वे बंगाली भाषा में कुछ कमजोर थे। बाकि विषयों की अपेक्षा बंगाली मे उनके अंक बहुत कम आते थे।

एक दिन उनके अध्यापक ने कक्षा के सभी छात्रों को बंगाली में निबंध लिखने को कहा। सभी छात्रों ने बंगाली में निबंध लिखा। मगर सुभाष जी के निबंध में बाकि छात्रों की तुलना में अधिक त्रुटियाँ मिलीं।

अध्यापक ने जब इन कमियों का जिक्र भरी कक्षा में किया तो सभी छात्र उनका मजाक उड़ाने लगे। उनकी कक्षा का ही एक छात्र सुभाषचंद्र बोस से बोला– "वैसे तो तुम बड़े देशभक्त बने फिरते हो मगर अपनी ही भाषा पर तुम्हारी पकड़ इतनी कमजोर क्यों है?"

यह बात सुभाषचन्द्र बोस को बहुत खराब लगी और यह बात उन्हें अन्दर तक चुभ गई। सुभाषचंद्र बोस ने मन ही मन में दृढ़ निश्चय कर लिया कि वह अपनी भाषा बंगाली सही तरीके से जरुर सीखेंगे।

चूँकि उन्होंने संकल्प कर लिया था इसलिये तभी से उन्होंने बंगाली का बारीकी से अध्ययन शुरू कर दिया। उन्होंने बंगाली के व्याकरण को पढ़ना शुरू कर दिया, उन्होंने दृढ निश्चय किया कि वे बंगाली में केवल पास ही नहीं होंगे बल्कि सबसे ज्यादा अंक लायेंगे।

सुभाष ने बंगाली पढ़ने में अपना ध्यान केन्द्रित किया और कुछ ही समय में उसमे महारथ हासिल कर ली। धीरे–धीरे उनकी वार्षिक परीक्षाएँ निकट आ गयीं।

सुभाष की कक्षा के सभी छात्र सुभाष से कहते – भले ही तुम कक्षा में प्रथम आते हो मगर जब तक बंगाली में तुम्हारे अंक अच्छे नहीं आते, तब तक तुम सर्वप्रथम नहीं कहलाओगे।

वार्षिक परीक्षाएँ खत्म हो गयीं। सुभाष सिर्फ कक्षा में ही प्रथम नहीं आये बल्कि बंगाली में भी उन्होंने सबसे अधिक अंक प्राप्त किये। यह देखकर विद्यार्थी और शिक्षक सभी दंग रहे गये।

सभी छात्र यह जानने को उत्सुक थे कि यह सब कैसे हुआ इसलिये उन्होंने सुभाष से पूछा – यह कैसे संभव हुआ ?

तब सुभाष विद्यार्थियों से बोले – यदि मन में लगन, उत्साह और एकाग्रता हो तो इन्सान कुछ भी हासिल कर सकता है।

सद्विचार

स्वामी विवेकानन्द

शिक्षण संवाद

हमारा कर्तव्य हैं कि हम हर उस व्यक्ति का हौंसला बढ़ाएँ, जो अपने ऊंचे विचारों पर जीवन व्यतीत करने के लिए संग्रह कर रहा है।

कभी भी यह मत सोचो कि तुम्हारे लिए, तुम्हारी आत्मा के लिए कुछ भी नामुमकिन है। यह सोच ही सबसे ज्यादा दुखदायी है।

अगर कोई पाप है.., तो वो सिर्फ और सिर्फ अपने आपको या दूसरों को कमजोर मानना है।

तुम्हे अंदर से सीखना है सब कुछ..। तुम्हे कोई नहीं पढ़ा सकता.., कोई आध्यात्मिक नहीं बना सकता। अगर यह सब कोई सिखा सकता है तो यह केवल आपकी आत्मा है।

ईर्ष्या तथा अंहकार को दूर कर दो, संगठित होकर दूसरों के लिए कार्य करना सीखो। सच्चाई के लिए कुछ भी छोड़ देना चाहिए.., पर किसी के लिए भी सच्चाई नहीं छोड़ना चाहिए।

अनुभव ही जगत में सर्वश्रेष्ठ शिक्षक है, जब तक जीना, तब तक सीखना यही हमारा लक्ष्य होना चाहिए।

यही दुनिया है! यदि तुम किसी का उपकार करो, तो लोग उसे कोई महत्व नहीं देंगे, किन्तु ज्यों ही तुम उस कार्य को बंद कर दो, वे तुरंत (ईश्वर न करे) तुम्हें बदमाश प्रमाणित करने में नहीं हिचकिचाएंगे।

भाग्य बहादुर और कर्मठ व्यक्ति का ही साथ देता है। पीछे मुड़कर मत देखो आगे, अपार शक्ति, अपरिमित उत्साह, अमित साहस और धैर्य से ही महत्वपूर्ण कार्य निष्पन्न किए जा सकते हैं।

मास्टर साहब

शिक्षण संवाद

1999 में मृणालिनी श्रीवास्तव जी की कलम से निकला यह लघु उपन्यास जहाँ शिक्षकों की थाह लेता है, वहीं बच्चों के मन को भी पढ़ता है। इस पुस्तक में एक मास्टर साहब हैं जो अपनी छड़ी को मौलाबख्श कहते हैं और बच्चे उस छड़ी को देखकर ही काँपते हैं। मास्टर साहब का बस एक ही उद्देश्य है कैसे भी बच्चों को पढ़ा–लिखाकर अच्छा इंसान बनाना। सब कुछ ठीक चल रहा होता है कि अचानक से शहर से निहाल नाम का बच्चा गाँव में रहने आता है और फिर मास्टर साहब और निहाल की जिंदगी में बदलाव आने लगते हैं। निहाल वो शरारती बच्चा है जिसे मौलाबख्श भी नहीं डरा पाता। एक बार तो मौलाबख्श से बचने को निहाल मेज के नीचे घुस जाता है।

असली कहानी तब बनती है जब गाँव में सर्कस आता है और निहाल भाँति–भाँति के बहाने बनाकर सर्कस में जाना चाहता है लेकिन मास्टर साहब की कक्षा से बच पाये तब न। निहाल और उसके साथी मिलकर मास्टर जी को जबरदस्ती बीमार भी करार देते हैं। लेकिन मास्टर साहब भी मास्टर साहब होते हैं वो ऐसा नाटक खेलते हैं कि निहाल स्वयं लज्जित हो जाता है।

कुल मिलाकर देखा जाए तो ये कहानी बच्चों को सीख देती है कि अध्यापक

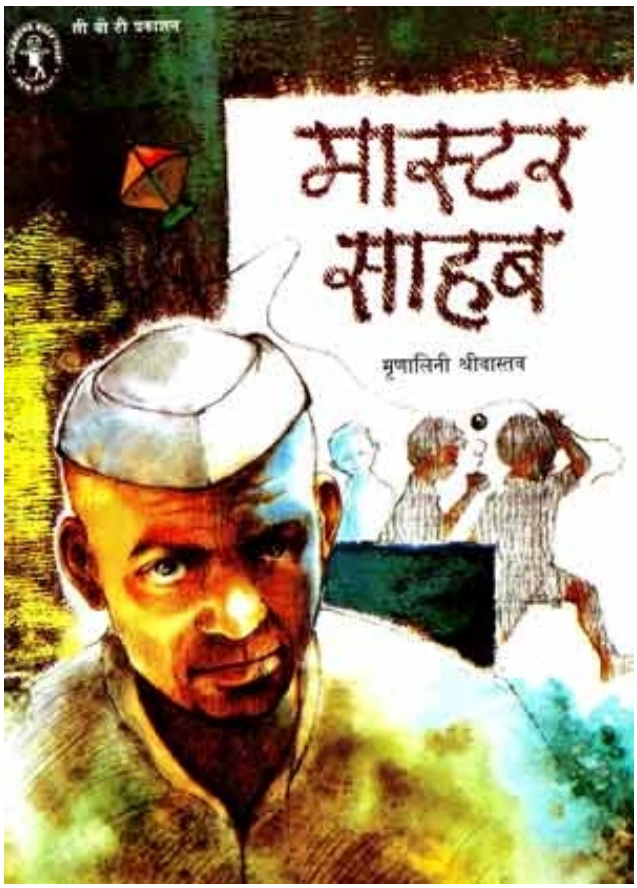

उनकी सारी शैतानियाँ समझते हैं। बच्चे कितने भी बहाने बना लें लेकिन अध्यापक को मूर्ख नहीं बना सकते। कहानी के अंत में जब निहाल बड़ा अधिकारी बनकर मास्टर साहब से मिलने आता है वो अत्यंत ही भावुक पल होता है। सीबीटी प्रकाशन से प्रकाशित यह पुस्तक आपके पुस्तकालय में होनी चाहिए और यदि नहीं है तो तुरन्त मँगा लीजिए।

□□□

बच्चों का कोना

कैसे बनती कविता पहेली, कैसे बनते गीत
कैसे बनते दोस्त सखा और कैसे बनते मीत

अक्षर से है बनती कविता, सुर से बनते गीत
प्रेम से बनते दोस्त सखा और मन से बनते मीत

कैसे बनते अच्छे इंसां, कैसे बनते हैं महान
कैसे जीते संघर्षो से, कैसे हटते तूफान

सत्कर्म से बनते अच्छे इंसां , बड़े कर्मों से महान
हिम्मत से जीते संघर्षों से, सच से हटते तूफान

कैसे बनते ''अच्छे बच्चे'' ,कैसे करते अच्छे काम
और क्या– क्या करने से होता है उनका नाम

सद्गुण से बनते अच्छे, समय से करते पूरा काम
शिक्षा, खेल स्वास्थ्य में बढ़कर करते अपना नाम

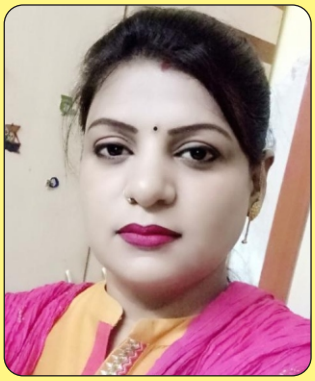

प्रीति श्रीवास्तव,
सहायक अध्यापक,
उच्च प्राथमिक विद्यालय रन्नो,
विकास क्षेत्र–बक्शा,
जनपद–जौनपुर।

तितली रानी

आज मेरे विद्यालय में तितली रानी आयी।
बच्चों के मन को खूब भायी।
रंग–बिरंगी प्यारी, डाली–डाली पर मुस्कायी।
आज मेरे विद्यालय में तितली रानी आयी।

कभी पंख खोलकर उड़ जाती।
कभी पंख बन्द कर बैठ जाती।
सबके मन को मोह लेती।
सबके पास आकर उड़ जाती।
आज मेरे विद्यालय में तितली रानी आयी।।

तितली रानी को देख बच्चे मुस्काते।
तितली रानी के संग खुश हो जाते।
रंग–बिरंगे पंखों से फूलों को छूकर उड़ जाती।
आज मेरे विद्यालय में तितली रानी आयी।।

बच्चों को संदेश ये देती, रहो हमेशा पुलकित।
हर ऋतु हर मौसम में फूलों सा मुस्काओ।
आज मेरे विद्यालय में तितली रानी आयी।।

बार–बार मेरे पास वो आती।
कान के पास कुछ कहकर जाती।
जैसे पौधे लगाने को धन्यवाद देकर उड़ जाती।
आज मेरे विद्यालय में तितली रानी आयी।

तितली रानी आयी, तितली रानी आयी।।

रचयिता
अजय कुमार श्रीवास्तव,
सहायक अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय टेवाँ प्रथम,
विकास खण्ड–मंझनपुर,
जनपद–कौशाम्बी।।

माह की सर्वश्रेष्ठ ब्लॉग पोस्ट

https://shikshansamvad.blogspot.com/2018/12/blog-post_60.html

अनमोल रत्न

शिक्षण संवाद

मित्रों आज हम आपका परिचय मिशन शिक्षण संवाद के माध्यम से बेसिक शिक्षा की अनमोल रत्न शिक्षिका बहन शिल्पी शर्मा और उनके सहयोगी विद्यालय परिवार से करा रहे हैं। जिन्होंने अपनी सकारात्मक सोच और टीम वर्क के महत्व को आत्मसात करते हुए विद्यालय को आपसी सामंजस्य और विश्वास का केन्द्र बना दिया।

जहाँ आज बेसिक शिक्षा अनेकों व्यवहारिक समस्याओं के बीच एक ऐसा अव्यवहारिक समस्या से जूझ रहा है जो विद्यालय परिवार को एक ऐसे नकारात्मक माहौल में समा देता है जहाँ से निकालना आज सबसे बड़ी चुनौती है। वह है शिक्षकों का आपसी सामंजस्य। आज बेसिक शिक्षा के अनेकों विद्यालय इस समस्या की भयंकर बीमारी की चपेट में हैं जिसका सीधा असर विद्यालय और बच्चों के विकास तथा विश्वास पर पड़ रहा है। स्थिति यह है कि एक शिक्षक ही दूसरे को आगे बढ़ने और कुछ करने में सबसे बड़ा बाधक बन रहा है। यदि इस स्थिति में सुधार होकर ऐसे शिक्षक साथी सकारात्मक सोच के साथ आपसी सामंजस्य बना लें तो हमें विश्वास है कि बेसिक शिक्षा के 50% विद्यालय वर्तमान परिस्थितियों में ही आदर्श स्थिति में पहुँचकर शिक्षा के उत्थान और शिक्षक के सम्मान के लिए मील का पत्थर साबित हो सकते हैं। हम मिशन शिक्षण संवाद परिवार की ओर से शिल्पी बहन जी एवं विद्यालय परिवार के सभी सहयोगियों को कोटि–कोटि नमन करते हैं कि उन्होंने हम सबके लिए आपसी सामंजस्य का अनुकरणीय और प्रेरक उदाहरण प्रस्तुत किया।

आइये देखते हैं विद्यालय परिवार द्वारा आपसी सहयोग और सामन्जस्य से किए गये कुछ प्रेरक कार्यों कोः–

मैं शिल्पी शर्मा प्रधानाध्यापिका मॉडल प्राइमरी स्कूल एलमपुर विकास क्षेत्र–लोधा, अलीगढ़ में कार्यरत हूँ। वर्तमान विद्यालय में मेरी व मेरे चार साथियों की नियुक्ति 3 वर्ष पूर्व दिनांक 19 मार्च–2015 को अंग्रेजी माध्यम द्वारा संचालित पायलट प्रोजेक्ट के तहत जिले के पहले दो विद्यालय में से एक एलमपुर में चयन उपरांत हुई। उस समय विद्यालय में छात्र संख्या–343 थी। हमारे द्वारा अंग्रेजी माध्यम होने के प्रचार–प्रसार किए जाने के कारण नामांकन में आशानुरूप वृद्धि हुई वर्तमान में विद्यालय में छात्र संख्या– 442 है। जो हमारे पूरे स्टाफ के कड़े परिश्रम का फल (परिणाम)है।

5 अध्यापकों के साथ लगभग 450 बच्चों को लेकर चलना यूँ तो चुनौतीपूर्ण था किंतु हमारे लिए यह गर्व का विषय भी था कि अभिभावकों ने हम पर विश्वास करके प्राइवेट संस्थानों से नाम कटवाकर हमारे यहाँ प्रवेश दिलाया हमने भी उनके इस विश्वास को कायम रखा है।

विद्यालय का प्रांगढ़ तो काफी बड़ा था किंतु उसमें भौतिक सुविधाओं का अभाव था जैसे प्रधानाध्यापक कक्ष, कक्षा में अध्यापकों व बच्चों के बैठने की व्यवस्था, पंखे इत्यादि।

सर्वप्रथम इन कमियों को पूरा करते हुए ब्लैक बोर्ड के साथ व्हाइट बोर्ड लगवाए गए साथ ही साथ कमरों व बाहरी इमारत को रंग बिरंगी ज्ञानवर्धक चित्रकारी से बच्चों व अध्यापकों द्वारा सजाया गया जिसमें श्रीमती वीनस सहायक अध्यापक व श्रीमती वंदना गौड़ का विशेष योगदान रहा। प्रारंभ

से ही ऑडियो, वीडियो, लैपटॉप के माध्यम से मेरे व श्रीमती नीना शर्मा द्वारा खेल–खेल में शिक्षा कविताएँ आदि सिखायी गयीं। जिससे बच्चे रोमांचित होकर इसमें रुचि ले रहे हैं। इसे मूर्त रूप देते हुए इसी वर्ष जुलाई माह में आईसीटी पर आधारित स्मार्ट क्लास का उद्घाटन माननीय जिलाधिकारी महोदय द्वारा किया गया। जिसमें विशेष सहयोग हमारे उच्च प्राथमिक विद्यालय एलमपुर के प्रधानाध्यापक श्री वीरेंद्र सिंह जी का रहा। साथ ही साथ हमारे विद्यालय के सहायक अध्यापक श्री सतीश सिंह द्वारा डाटा एकत्रित करके उसे बच्चों के अनुरूप सृजित किया जहाँ बच्चे प्रोजेक्टर व LCD के माध्यम से प्राइवेट संस्थानों से बेहतर ज्ञान प्राप्त कर रहे हैं।
छात्रों के सर्वांगीण विकास में खेल की महत्वपूर्ण भूमिका है जिसमें सतीश सिंह (व्यायाम शिक्षक) के निर्देशन में बालकों ने ब्लॉक स्तरीय के साथ–साथ जनपद स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता में लगातार 2 वर्षों से अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है । ''खूब खेलो, खूब पढ़ो'' उक्ति को चरितार्थ करते हुए जिले का पहला बैडमिंटन कोर्ट सभी अध्यापकों के सहयोग से निर्मित किया गया है।

इसी आशा के साथ एलमपुर प्रगति की दिशा में हमेशा आगे बढ़े ————
मिशन शिक्षण संवाद टीम की छोटी सी साथी शिल्पी शर्मा

संकलनः यतेन्द्र सिंघल जी
मिशन शिक्षण संवाद अलीगढ़
नोटः– आप अपने मिशन परिवार में शामिल होने, आदर्श विद्यालय का विवरण भेजने तथा सहयोग व सुझाव को अपने जनपद सहयोगियों को अथवा मिशन शिक्षण संवाद के वाट्सअप नम्बर–9458278429 और ई–मेल shikshansamvad@gmail.com पर भेज सकते हैं।
निवेदकः विमल कुमार
05–12– 2018

माह का मिशन

जन गण मन

शिक्षण संवाद

प्रतिमाह पत्रिका के द्वारा मिशन शिक्षण संवाद आपके लिये, आप ही में से किसी साथी द्वारा सुझाये गये माह के मिशन को प्रस्तुत करता है और आशा करता है कि प्रदेश के समस्त विद्यालयों में इसे अपनाया जाए। इस माह गणतंत्र दिवस भी है। अतः यातायात के नियमों को संविधान से जोड़ते हुए एक नाटिका का निर्माण किया गया है। आशा है कि आप सभी अपने–अपने विद्यालयों में इस नाटिका को कराएँगे व इससे सम्बंधित फोटोग्राफ हमें उपलब्ध कराएँगे जिसे अगले अंक में प्रकाशित किया जाएगा।

आज रोहन विद्यालय जाने को बहुत उतावला था। उसके विद्यालय ने जिला स्तर पर निकाली जाने वाली गणतन्त्र दिवस प्रभात फेरी में प्रतिभाग किया था, सभी बच्चे पिछले एक महीने से नारों, नृत्य और गीत का अभ्यास कर रहे थे।

दृश्य–1

रोहन बाजार गये अपने पिताजी का घर पर ही इंतजार कर रहा था जो उसे प्रतिदिन विद्यालय छोड़ते थे।

रोहन–

(घड़ी की ओर बैचेनी से देखते हुये)– कहाँ रह गये पिताजी? अभी तक नहीं आये। कहीं मैं स्कूल के लिए लेट न हो जाऊँ।

रोहन की माँ – क्या हुआ रोहन'? बड़े बेचैन दिख रहे हो?

हाँ– माँ, पिताजी अभी तक नहीं आये?

ठीक है अभी फोन करके पूछती हूँ।

(रोहन की माँ टहलते हुये)

कहाँ रह गये तेरे पिताजी?

रोहन की माँ उसके पिता को फोन करती है.....

दृश्य– 2

फोन मिलते ही भीड़ का बहुत शोर सुनायी देता है।

रोहन की माँ– अरे कहाँ हैं आप? रोहन आपका इंतजार कर रहा है। उसे आज जल्दी विद्यालय पहुँचना है।

पिताजी– (कुछ–कुछ कटके आती आवाज के साथ)

हाँ– शहर में बहुत जाम लगा है। बिना हेलमेट तीन व्यक्ति बाइक पर बैठकर तेजी से जा रहे थे जो दुर्घटना का शिकार हो गये। उसी वजह से यहाँ जाम लग गया है। मैं जल्दी घर नहीं पहुँच पाऊँगा। तुम रोहन को उसके चाचा के साथ विद्यालय भेज दो।
(रोहन के चाचा उसे विद्यालय पहुँचा आते हैं।
दृश्य–3
रोहन की शिक्षिका रोहन से देर से आने की वजह पूछती है।
शिक्षिका – रोहन इतनी देर क्यों हो गयी?
रोहन – मैडम, पिताजी के साथ विद्यालय आना था, लेकिन आज पिताजी सुबह से शहर में जाम में फँस गये हैं। किसी व्यक्ति के साथ दुर्घटना हो गयी है।
शिक्षिका – (दुःख प्रकट करते हुए) ओह! न जाने कब लोग नियमों का पालन करना सीखेंगे, जबकि सड़क पर सुरक्षा के नियम हम सभी को सुरक्षित रहने के लिए बनाये जाते हैं लेकिन लोग नियमों को तोड़ने में अपनी बहादुरी समझते हैं।

रोहन– अच्छा मैडम! क्या हमारे देश को चलाने के लिए भी नियम बनाये गये हैं?
शिक्षिका – हाँ बेटा
रोहन– घर, विद्यालय और सड़क सुरक्षा की तरह देश के
काम–काज को चलाने के लिए भी बहुत सारे नियम और कानून बनाये गये हैं। इन सभी नियम–कानूनों से मिलकर हमारा संविधान बना है।
जिसके अनुसार शासन काम करता है। देश को चलाने के लिए 26 जनवरी 1950 को हमारा संविधान पूरे देश में लागू किया गया था।
इसी दिन को हम गणतन्त्र दिवस के रूप में मनाते हैं।
देश की सुव्यवस्था के लिए बनाये गये नियम और कानून का पालन करना प्रत्येक देशवासी का कर्तव्य है...और यही सच्चा गणतंत्र है।
(रोहन मुस्कराने लगता है)
रोहन – मैडम जी, आज हम इसी की प्रभात फेरी में तो जा रहे हैं न।
शिक्षिका– हाँ रोहन, हम सबको अपने राष्ट्र को बेहतर बनाने के लिए नियमों का पालन अवश्य करना चाहिए।
रोहन – जी मैडम।
सभी बच्चे भारत माता की जय और हमारा गणतंत्र अमर रहे का नारा जोर से लगाते हुए प्रभात फेरी के लिए निकल पड़ते हैं।
सारा शहर, भारत माता की जय व गणतन्त्र दिवस अमर रहे के नारों से गूँज उठता है।

टीम मिशन शिक्षण संवाद

बात शिक्षिकाओं की

एक शिक्षिका के रूप में मेरा अनुभव

–रीना सैनी

शिक्षण संवाद

मैं बचपन से अपने शिक्षकों को अपना आदर्श मानती हूँ। उन्होंने मुझे जो भी सिखाया उस पर आज तक अमल करती हूँ। उन्होंने सिर्फ किताबें ही नही पढ़ायीं बल्कि जीवन जीने का सही रास्ता भी सिखाया। मेरे हर शिक्षक की सीख मेरे लिए पत्थर पर लकीर है। शायद उन्ही संस्कारों का परिणाम था कि बचपन से ही मेरे मन में ये सपना पला कि मैं भी एक शिक्षिका बनूँ। मेरा सपना पूरा हुआ 9 नवम्बर 2015 को।

मेरा सफर बहुत सारी विषम परिस्थितियों के बीच शुरू हुआ।लेकिन विचलित न होते हुए मैंने बच्चों को प्यार, दुलार से समझाते हुए, जिंदगी के अनुभवों को बाँटते हुए पढ़ाना शुरू किया। बच्चों को नैतिकता के साथ पढ़ाते हुए कई मोड़ ऐसे भी आये जब मुझे मानवीय विषम परिस्थितियों का सामना करना पड़ा और सहयोगियों द्वारा सहयोग करने के बजाय वो विपक्षी बनकर मेरे सामने खड़े हुए और मैं टूटती चली गयी कई बार। उन्ही पलों में मेरे बच्चों का वह रूप देखने को मिला जिसकी मैंने कल्पना भी न की थी। जो मैंने बच्चों को सिखाया वह मुझे ब्याज सहित वापस मिला। जितने आदर्श संस्कार बच्चों को मैंने दिए थे उन्हीं का परिणाम मेरे सामने मेरे मुश्किल वक्त में देखने को मिला जब मेरा मनोबल टूटा तो बच्चों ने ही मुझे सम्भाला और कहा कि मैडम जी आप ही तो कहती थीं कि कोशिश और हिम्मत करने वालों की कभी हार नहीं होती और सच्चाई का साथ कभी नहीं छोड़ना चाहिए चाहें कितनी ही मुश्किल क्यों न आये। कई बार मैं कक्षा में रो पड़ती थी तो मेरे बच्चों ने मुझे सम्भाला और मेरे आत्मविश्वास को कम नहीं होने दिया और उनकी बात दिल को छू जाती और फिर नयी ऊर्जा के साथ मैने कदम आगे बढ़ाये और बच्चों का जो प्यार मिला कि मैं आगे बढ़ती ही चली गयी।

मेरे लिए प्यार क्या है मैं बताती हूँ––

1. त्यौहारों पर बनी चीजों को प्यार से जबर्दस्ती देना प्यार है।
2. सिखाये हुए craft को छुट्टियों में बनाकर android फोन न होते हुए भी किसी और नम्बर से भेजना प्यार है।
3. अपने हाथों से मैगी बनाकर जिद करके खिलाना प्यार है।
4. मेरे जन्मदिन पर चुपके से मुझे पत्र लिखकर देना प्यार है।
5. स्कूल के बच्चों के अतिरिक्त अन्य स्कूल के बच्चों द्वारा नए वर्ष पर उपहार देना प्यार है।

इसी बीच एक होनहार छात्रा गृहक्लेश के कारण नानी घर चली गई और वहाँ जाकर रोते–रोते फोन किया कि मैम मुझे माफ कीजिये मैं आपसे बिना मिले ही चली आयी। उसका कहकर रोना और मेरा सुनकर रोना ये प्यार है।फिर टीचर्स डे के दिन मैं उससे मिलने नानी के घर गयी गले लगाकर रोयी ये प्यार है।

ये पवित्र रिश्ता सारी दुनिया से अनमोल है। क्या मैं अपने बच्चों के प्यार का कर्ज कभी चुका पाऊँगी? नहीं, कभी नहीं। मैं उनके आगे नतमस्तक हूँ और जितना भी उनके लिए करूँ सदा कम ही रहेगा ।

बच्चों के प्यार के संदर्भ में मेरा अनुभव व सन्देश ––

1. हम जो देते है बच्चे वही हमें वापस करेंगे।
2. शिक्षा एक प्यार से बँधी डोर है जिसे जोर से खींचने पर यह टूट जाएगी तो शिक्षा बच्चों से दूर हो जाएगी।
3.अगर बच्चे हमारे साथ खुश हैं तो वह प्रतिदिन आगे ही बढ़ेंगे, अगर बच्चा उदासीन मन के साथ रहेगा तो वह कुछ ग्रहण नही करेगा।
4. अच्छे संस्कारो के साथ दी गयी शिक्षा कभी विफल नही होगी।
5. बच्चे हमारे कच्ची मिट्टी के समान हैं उन्हें जिस रूप में चाहे एक शिक्षक ढाल सकता है।
6. बच्चे सिर्फ प्यार की भाषा समझते हैं।
7. हम बच्चों के हो जाएँ और बच्चे हमारे तो हर मुश्किल हल हो जाती है।

इसी प्यार के भरोसे ही अरविंद जी व मेरे सहयोग से इस वर्ष 95 मैडल्स व 5 शील्ड खेल प्रतियोगिता में जीतकर विद्यालय का नाम बच्चों ने रोशन किया।

हमारे बच्चे ही हमारा पुरस्कार हैं।

□□□

रीना सैनी,
सहायक अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय गिदहा,
विकास खण्ड–सदर,
जनपद –महाराजगंज।

कस्तूरबा विशेष

कस्तूरबा विद्यालय को जब मिला मिशन शिक्षण संवाद

–वीरेन्द्र परनामी

शिक्षण संवाद

सोशल मीडिया, शिक्षकों और छात्र–छात्राओं के लिए सीखने–सिखाने का एक बेहतर माध्यम के रूप में कार्य करता है। उसी सोशल मीडिया ने एक दिन मुझे मिशन शिक्षण संवाद से परिचित कराया। उसकी पोस्टों में शिक्षा की नई–नई विधाओं में शिक्षण गतिविधियों को देख उसके पेज को लाइक करने से खुद को रोक नहीं पाया।

फिर क्या, मेरी तो जैसे सारी मुराद ही पूर्ण हो गई। मैं नित प्रतिदिन उसकी पोस्ट देखता उनसे जो सीखता अपने विद्यालय में प्रयोग करने का प्रयास करता। धीरे–2 कुछ कार्य में सुधार आने लगा और मैं भी अपनी पोस्ट बनाकर मिशन के पेज में भेजने लगा। पहली बार जब मेरी खुद की बनाई मेरे ही विद्यालय की पोस्ट मिशन के पेज में आई तो बहुत खुशी हुई और उस खुशी को मैंने कस्तूरबा विद्यालय के कई अन्य व्हाट्सएप्प फेसबुक ग्रुप्स जिनसे मैं जुड़ा था, पर शेयर करी। बहुत लोगों को पसंद आई। बहुत से कमेन्ट शेयर लाइक ने मुझको और ऊर्जावान बना दिया। मैं रोज कुछ नया सोचता उसे विद्यालय पर करता और पोस्ट बनाकर मिशन शिक्षण संवाद को भेज देता। पोस्ट बनकर जो आती उसकी लिंक कस्तूरबा विद्यालय के व्हाट्सएप्प ग्रुप्स और फेसबुक में भेजता।

धीरे –2 मिशन शिक्षण संवाद के कर्मठ साथियों से परिचय होता गया वहीं कुछ कस्तूरबा विद्यालय मुझे अपने विद्यालय की गतिविधियों को दे देते तो मैं उन्हें मिशन शिक्षण संवाद को भेज देता। कुछ दिनों तक यह सिलसिला यूँ ही चलता रहा।

एक दिन जब मेरी बात विमल सर से हुई तो उन्होंने मिशन शिक्षण संवाद का कस्तूरबा विद्यालय का एक समूह बनाने का प्रस्ताव दिया। मैंने बिल्कुल भी देर न की एक व्हाट्सएप्प समूह बनाकर कस्तूरबा विद्यालयों के व्हाट्सएप्प समूह और अन्य सोशल मीडिया के माध्यम से इस ग्रुप की विशेषताओं को बताते हुए एक संदेश भेजा। प्रारम्भ में 25 –30 कस्तूरबा विद्यालयों के साथ काम करना शुरू किया। विद्यालय गतिविधियों, नए नए शिक्षण विधियों, TIm, नवाचार के अद्भुत तरीकों ने जल्द ही इस संख्या को 100 के पार पहुँचा दिया।

मेरे जैसे अनेक KGBV में पढ़ाने वाले शिक्षक–शिक्षिकाओं ने इसका लाभ लिया। मिशन शिक्षण संवाद से प्राप्त अनेकों प्रयोगों को विद्यालय स्तर पर प्रयास करते कुछ अपने से नया करने का प्रयास करते। धीरे –धीरे हमारे पढ़ाने का तरीका ही बदल गया। अब हम भी पुरानी परम्पगत शिक्षण से हटकर नवीन विधाओं के माध्यम से शिक्षण कार्य कर पा रहे हैं।

निश्चित ही मिशन शिक्षण संवाद के इस प्लेटफॉर्म ने हमें जो सिखाया, बताया। उसका हमारे शिक्षण कार्य और छात्राओं में सीखने की क्षमताओं में बहुत ज्यादा परिवर्तन आया है। मैं मिशन शिक्षण संवाद से जुड़े समस्त शिक्षक–शिक्षिकाओं व अन्य अधिकारी जो शिक्षा के उत्थान, शिक्षक के सम्मान के लिए कार्य कर रहे हैं उनका कोटि–कोटि आभार व्यक्त करता हूँ। साथ ही कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय के उन शिक्षक–शिक्षिकाओं से अपील करुँगा कि जो अब तक मिशन शिक्षण संवाद के समूह से नहीं जुड़े या निष्क्रिय है, वह शीघ्र ही इस समूह के साथ जुड़ें और शिक्षा के उत्थान के सिपाही बन नव–निर्माण के सहायक बनें।

वीरेन्द्र परनामी
(उर्दू शिक्षक)
क०गां०आ०बा०वि०
विकास क्षेत्र– कुरारा
जनपद –हमीरपुर (उ०प्र०)

योग–विशेष

अष्टांग योग

डॉ0 राघवेन्द्र प्रताप
उच्च प्राथमिक विद्यालय घोरहट
विकास क्षेत्र–नाथनगर
जनपद–सन्त कबीर नगर (उ.प्र.)

विद्यार्थी जीवन में योग का बहुत अधिक महत्व है। महर्षि पतंजलि द्वारा वर्णित यम, नियम, आसन, प्राणायाम, धारणा, ध्यान का अभ्यास यदि विद्यार्थियों को आसान तरीके से कराया जाए तो इसके आश्चर्यजनक परिणाम मिल सकते हैं।

अष्टांग योग के पहले अंग 'यम' के अंतर्गत महर्षि पतंजलि ने सत्य, अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह की बात कही है। विद्यार्थियों को चरित्रवान नागरिक बनाने में इन नैतिक गुणों का बड़ा महत्व है, जिसकी आज कमी देखी जा रही है। स्कूली पाठ्यक्रम में नैतिक शिक्षा को इसी उद्देश्य से लाया गया था कि बच्चों का चारित्रिक विकास हो। हम नैतिक शिक्षा की कहानियों के माध्यम से सत्य अहिंसा ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह के महत्व को बच्चों को समझा सकते हैं और इसे अपनाने के लिए उनको प्रेरित कर सकते हैं।

अष्टांग योग के दूसरे अंग 'नियम' के अंतर्गत महर्षि पतंजलि ने शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर प्रणिधान की बात कही है। इसके पालन से व्यक्तित्व में निखार आता है। शौच के अंतर्गत शारीरिक और मानसिक स्वच्छता की बात कही गई है। संतोष से मानसिक तनाव कम होता है तथा अनावश्यक लोभ से बचा जा सकता है। इसी प्रकार विद्यार्थियों को तप अर्थात् मेहनत और परिश्रम का महत्व बताया जा सकता है। स्वाध्याय तो विद्यार्थी जीवन का अनिवार्य अंग है। ईश्वरप्राणिधान के अंतर्गत बच्चों को आध्यात्मिक रूप से भी संपन्न बनाना भी आवश्यक है, जिसका आज के भौतिक जीवन में अत्यंत अभाव देखा जा रहा है।

अष्टांग योग के तीसरे अंग अर्थात् 'आसन' भी विद्यार्थियों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। योग में वर्णित विभिन्न आसनों के अभ्यास से शरीर की हड्डियों और माँसपेशियों का विकास होता है। आसनों के अभ्यास से शरीर तो मजबूत होता ही है, साथ ही साथ शारीरिक और मानसिक स्थिरता भी प्राप्त होती है। आसनों के अभ्यास से विद्यार्थियों के बैठने की स्थिति सही होती है। इससे विद्यार्थी सही स्थिति में बैठकर लंबे समय तक अध्ययन कर सकते हैं।

अष्टांग योग का चौथा अंग प्राणायाम है। प्राणायाम का अभ्यास हमारे श्वसन क्रिया को नियंत्रित करता है और हमारे फेफड़े को मजबूत बनाता है। विद्यार्थियों को यदि प्राणायाम का अभ्यास कराया जाए तो श्वास की गति नियंत्रित होने के साथ ही साथ मन पर भी नियंत्रण प्राप्त होता है जो कि उनके लिए अत्यंत आवश्यक है।

अष्टांग योग का पांचवा अंग 'प्रत्याहार' है जिसका अर्थ इंद्रियों को बाहरी विषयों से हटाकर किसी एक विषय पर एकाग्र करना होता है। विद्यार्थी जीवन में मन की चंचलता अधिक होती है। इसलिए प्रयास करके बच्चों के अंदर यह आदत डालनी चाहिए कि अध्ययन के दौरान उनके मन का भटकाव कम से कम हो।

'धारणा' को अंग्रेजी में बवदबमदजतंजपवद कहते हैं जिसका अर्थ किसी एक बिंदु पर या विषय पर मन को लंबे समय तक एकाग्र करना है। यह अष्टांग योग का छठवां अंग है। प्राणायाम के अभ्यास के बाद धीरे–धीरे यह योग्यता आ जाती है। विद्यार्थियों के लिए मन की एकाग्रता बहुत ही आवश्यक है। इसलिए इसका धीरे धीरे व्यवहारिक विधि से नियमित अभ्यास कराया जाना चाहिए।

अष्टांग योग के सातवें अंग के रूप में 'ध्यान' का वर्णन है जिसको अंग्रेजी में मेडिटेशन भी कहते हैं। ध्यान के अभ्यास से स्मरण शक्ति तेज होती है एवं मस्तिष्क की क्षमता में विकास होता है। इसलिए विद्यार्थियों को थोड़े समय के लिए ही सही कक्षा में नियमित रूप से ध्यान का अभ्यास कराया जाए तो उनकी स्मरण शक्ति में वृद्धि होगी और उनका मन शांत रहेगा। इससे उनको पढ़ने लिखने और विषय को समझने में सहायता मिलेगी।

इस प्रकार हम देखते हैं कि योग के विभिन्न अभ्यास विद्यार्थियों के शारीरिक एवं मानसिक विकास के लिए बहुत ही सहायक है। विद्यार्थियों को योग के इन अभ्यासों को सिखाने के लिए बहुत जोर जबरदस्ती नहीं करना चाहिए। आवश्यकता इस बात की है कि इन्हें बच्चों को व्यवहारिक और रुचिपूर्ण ढंग से सिखाया जाए। यदि हम ऐसा कर सके तो निश्चित रूप से हमें अच्छे परिणाम मिलेंगे।

खेल–विशेष

वॉलीबॉल

शिक्षण संवाद

विश्व के अनेक देशों के साथ–साथ भारत में भी वॉलीबॉल एक लोकप्रिय खेल है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर वालीबॉल के विकास के लिए फेडरेशन इंटरनेशनल डी वॉलीबॉल कार्य करती है। भारत में वॉलीबॉल खेल को राष्ट्रीय स्तर पर बढ़ावा देने के लिए 1950 ई0 को वॉलीबॉल फेडरेशन आफ इंडिया का गठन किया गया। सन 1949 को चेकोस्लोवाकिया के शहर प्राग में प्रथम विश्व वॉलीबॉल प्रतियोगिता कराई गई। 1955 ई0 में टोक्यो (जापान) में एशिया महाद्वीप की प्रथम वॉलीबॉल प्रतियोगिता हुई जिस में भारत ने जापान को फाइनल में हराया था।

वॉलीबॉल एक ऐसा खेल है जो हाथों से खेला जाता है। यह एक जाल से विभाजित खेल मैदान पर दो टीमों द्वारा खेला जाने वाला खेल है। इस खेल में गेंद को जाल के ऊपर से प्रतिद्वंदी के पाले में पहुँचाना और जमीन से छुआना तथा प्रतिद्वंदी के ऐसे ही प्रयास को रोकना होता है।

वॉलीबॉल के नियमः–

1. टीम

वॉलीबॉल के टीम में अधिक से अधिक 12 खिलाड़ी हो सकते हैं। जिनमें से 6 खिलाड़ी खेल में भाग लेते हैं। कोई भी टीम अपने खिलाड़ियों में एक विशेष रक्षात्मक खिलाड़ी नियुक्त कर सकती है। जिसे लिबेरो कहते हैं। 2.गेंदः–

गेंद का व्यास 65 से 67 सेंटीमीटर तथा भार 260 से 280 ग्राम होना चाहिए।

3.खेल क्षेत्रः–

वॉलीबॉल का खेल क्षेत्र वर्गाकार होता है तथा जिसकी माप 18 ' 9 मीटर होता है। इस खेल क्षेत्र की चारों ओर 3 मीटर चौड़ा स्वतंत्र क्षेत्र होना चाहिए। खेल क्षेत्र को रेखांकित करने वाली सभी रेखाएँ 5 सेंटीमीटर चौड़ी होनी चाहिए। मध्य रेखा, आक्रमण रेखा तथा सर्विस क्षेत्र को दर्शाया जाता है।

4.स्तंभः–

जाल को बांधने के लिए दो स्तंभ होना चाहिए। यह स्तम्भ गोल तथा 2.55 मीटर ऊँचे होने चाहिए। यह स्तंभ साइड रेखाओं से 0.5 से 1.00 मीटर की दूरी पर गड़े होने चाहिए।

5.जालः–

जाल की लंबाई तथा चौड़ाई 9.50 मीटर ' 1 मीटर होता है। जाल में छेद 10 सेंटीमीटर वर्ग की होती है।

6. जाल की ऊंचाई :–

खेल क्षेत्र के मध्य में जाल की पुरुषों के लिए ऊँचाई 2.43 मीटर तथा महिलाओं के लिए 2.24 मीटर होनी चाहिए जाल के दोनों सिरे जाल की ऊंचाई से 2 सेंटीमीटर से अधिक ऊँचे नहीं होने चाहिए।

7.एंटीनाः–

फाइबर ग्लास के दो डंडे या एंटीना जिनकी लंबाई 1.8 मीटर तथा गोलाई 10 सेमी0 होती है। प्रत्येक साइड सफेद पट्टे की बाहरी किनारे पर बाँधने चाहिए। जाल के ऊपर लाल व सफेद धारियाँ होनी चाहिए।

8.खेल सेट तथा मैचः–

टॉस अथवा सिक्का उछालने के पश्चात टॉस जीतने के आधार पर सर्विस करने का अधिकार टीम द्वारा सर्विस करने से खेल आरंभ होता है। खेल का आरंभ पिछली पंक्ति के दाहिनी ओर के खिलाड़ी द्वारा सर्विस करने पर होता है। गेंद को पिछली दल के खेल क्षेत्र में लौटने से पूर्व प्रत्येक टीम को गेंद पर तीन बार प्रहार का अधिकार होता है। ब्लॉक के समय गेंद से संपर्क करना तीन संपर्कों में नहीं गिना जाता। ब्लॉक के अतिरिक्त किसी भी समय खिलाड़ी निरंतर दो बार गिन से संपर्क नहीं कर सकता। जब एक टीम रैली अथवा संघर्ष जीत जाती है तो उसे 1 अंक प्राप्त होता है।

खेल के समय निम्नलिखित परिस्थितियाँ उत्पन्न हो सकती हैं

क. सर्विस करने वाली टीम अंक प्राप्त कर ले तथा सर्विस जारी रखें।

ख. सर्विस प्राप्त करने वाली टीम रैली जीत जाती है तो उसे अंक प्राप्त हो जाता है तथा अगली सर्विस करने का अधिकार मिल जाता है।

9.फलांकन पद्धतिः–

किसी सेट को जीतने के लिए पहले 4 सीटों में 2 अंकों की बढ़त के साथ पहले 25 अंक प्राप्त करने वाली टीम विजय होती है यदि अंक 2424 पर बराबर हो जाए तो खेल उस समय तक जारी रहता है जब तक किसी टीम को बढ़त 2 अंक की ना हो जाए यथा 26 24 27 25 आदि 3 सेट वाले मैच में दो सैनट तथा 5 सैट वाली मैच में तीनु सैट जीतने वाली टीम विजयी मानी जाती है यदि दोनों टीमें 22 सैट जीतकर बराबरी पर आ जाएं तो पाँचवां अंतिम सेट दो अंको की कम से कम भारत के साथ 15 अंक होना चाहिए।

खेल त्रुटियाँ–खेल में त्रुटियाँ निम्न प्रकार की हो सकती हैं–

क त्रुटिपूर्ण सर्विस
ख त्रुटिपूर्ण वापसी
ग थ्रमाना
घ दोहरा संपर्क
ड जाल को छूना
च जाल पार करना
छ जाल के नीचे से विपक्षी क्षेत्र में
ज आक्रमण प्रहार
झ मध्यांतर

वॉलीबॉल के मूल कौशल

एक सर्विस करना
दो पास करना डाइव करना तथा लुढ़क करना गेंद उठाना तथा तैयार करना स्मैश करना ब्लॉक करना आक्रमण तथा रक्षा की पद्धतियाँ

वॉलीबॉल की महत्वपूर्ण प्रतियोगिताएँ

क विश्व वॉलीबॉल चौंपियनशिप
ख ओलंपिक वॉलीबॉल चौंपियनशिप ग एशियन खेल वॉलीबॉल चौंपियनशिप
घ कामनवेल्थ वॉलीबॉल चौंपियनशिप ड एशियन वॉलीबॉल प्रतियोगिता
च राष्ट्रीय वॉलीबॉल चौंपियनशिप
छ जूनियर राष्ट्रीय वॉलीबॉल चौंपियनशिप

वॉलीबॉल के मुख्य खिलाड़ी गुरिंदर सिंह, सत्य प्रकाश, जिम्मी जॉर्ज, एप्पल लेनी, स्वामी रविकांत रेड्डी, सुखपाल सिंह, ओम प्रकाश, मयंक पटेल, हुसैन, मनदीप सिंह, प्रियंका बोरा, अश्वनी किरण, निर्मल सैनी आदि।

यह खेल शारीरिक फिटनेस व चुस्ती के लिये–इस खेल की उपयोगिता छात्र एवं छात्राओं के लिए महत्वपूर्ण है। इस खेल से बच्चे आपस में स्वस्थ प्रतियोगिता करना एवं सहयोग करना सीखते हैं। इस खेल को कम संसाधन स्थान में खेला जा सकता है। बच्चे उत्साहित होकर इस खेल को खेलते हैं तथा तनाव मुक्त होकर पढ़ाई में ध्यान केंद्रीय करते हैं।

उमेश कुमार सिंह प्रधानाध्यापक
प्राथमिक विद्यालय करमपुर नवीन
शिक्षा क्षेत्र बेरूआर बारी बलिया

जनवरी माह के महत्वपूर्ण दिवस

1 जनवरी = सेना चिकित्सा कोर स्थापना दिवस, नव वर्ष प्रारम्भ

4 जनवरी = लुई ब्रेल दिवस

9 जनवरी = प्रवासी भारतीय दिवस

10 जनवरी = विश्व हिन्दी दिवस

11 जनवरी = लाल बहादुर शास्त्री स्मृति दिवस

12 जनवरी = राष्ट्रीय युवा दिवस (स्वामी विवेकानंद जयन्ती)

13 जनवरी = गुरु गोविंद सिंह जयंती

15 जनवरी = थल सेना दिवस

23 जनवरी = नेताजी सुभाष चंद्र बोस जयंती, देश प्रेम दिवस

24 जनवरी = राष्ट्रीय बालिका दिवस

25 जनवरी = हिमाचल प्रदेश स्थापना दिवस

26 जनवरी = गणतंत्र दिवस

28 जनवरी = लाला लाजपत राय जयंती

30 जनवरी = महात्मा गांधी स्मृति दिवस

जनवरी का अंतिम रविवार = विश्व कुष्ठ रोग निवारण (उन्मूलन) दिवस

Anatomy Learning- 3D Atlas

OVERVIEW:
Visual Anatomy Free is an interactive reference, and education tool with audio pronunciation. Now it include a rotational organ 3D overview model and 3D animations!! It contains all body anatomy systems and has more than 500 feature points which can be interactively select. Each feature point has its own label and description. The app also has search function which can be used as searching the labels of all feature points. 8 overview images from Gray's anatomy. Full version has all 1247 images.
In additional, a quiz with 23 multi-choice questions also is included.

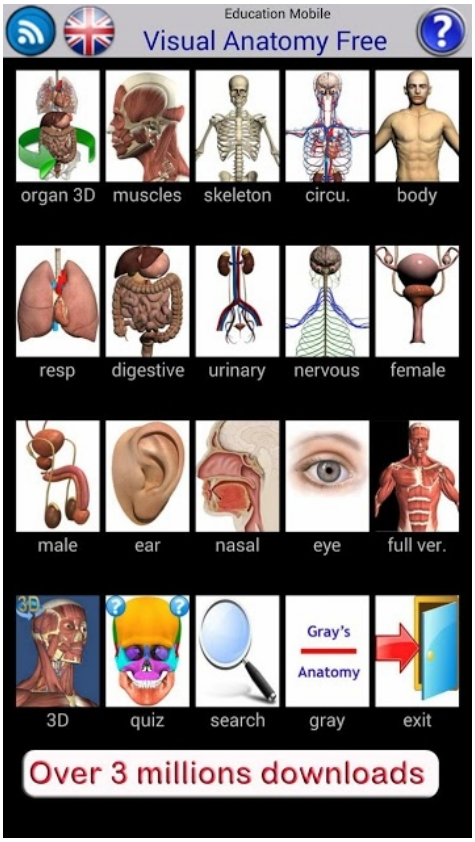

FEATURES:
★ Support English, French, Spanish, German languages.
★ muscle description (ORIGIN, INSERTION, NERVE, ACTIONS).
★ Tap and Zoom - Pinch zoom into and identify any region, bone or other feature by tapping on the screen.
★ Quiz mode - test yourself with an option to switch off the label of the feature point.
★ Quick Navigation - jump to a different system or organ by selecting the thumbnail.
★ Multi-choice quiz.
★ Audio pronunciation
★ Movies for anatomy and physiology.
★ Great for learning anatomy and physiology
★ Free periodic updates.
★ Can be used as anatomy dictionary by searching anatomy term.
★ Support Google search result.

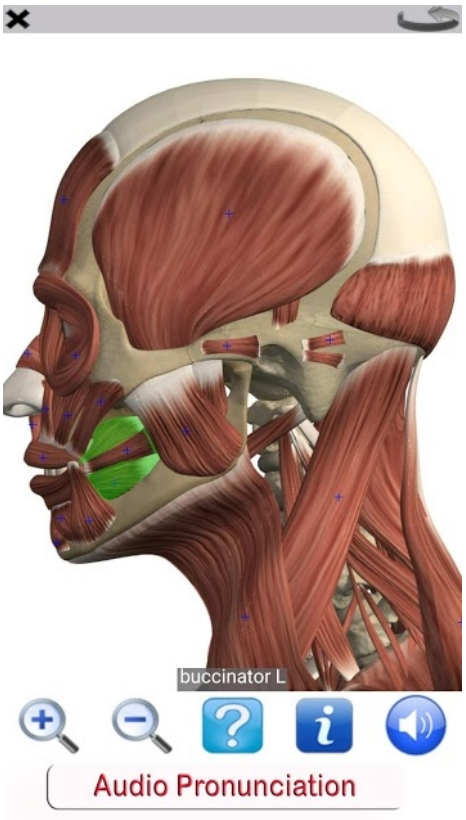

CONTENTS:
Organ 3D, Muscular System (overview, head, arm and foot muscles), Skeletal System (overview, skull, hand and foot bones. Some bone marks in the skull), Circulation System, Body Region, Heart, Respiratory System, Digestive System, Urinary System, Nervous System (overview and brain), Female and male Reproductive Systems, Ear Structure, Nasal Cavity, Eye.

मिशन–उपस्थिति

बेसिक के सरकारी विद्यालयों में पायी जाने वाली सबसे प्रमुख समस्या छात्र उपस्थिति के प्रतिशत को लेकर बनी रहती है। जहाँ प्राइवेट विद्यालयों में उपस्थिति 80% से अधिक हमेशा बनी रहती है वहीं बेसिक के विद्यालयों में यह घटकर औसतन 50 से 60% रह जाती है क्या कारण है कि बेसिक में इतनी कम उपस्थिति रहती है। साथ ही वे कौन सी राहे हैं, जिन पर चलकर छात्र उपस्थिति को 80% से अधिक पाया जा सकता है। इन समस्त तथ्यों पर विचार करने के लिए प्रदेश के विभिन्न जनपदों से ऐसे विद्यालयों के अनुभवों को साझा किया जा रहा है, जिन्होंने न स्वयं राहें बनायीं बल्कि उन राहों पर चलकर अपने विद्यालय की औसत उपस्थिति 80% से अधिक बनाए रखी। इस पर स्वयं ना कहकर उनके अनुभवों को उन्हीं के शब्दों में आपके समक्ष रखा जा रहा है।

स्कूल–प्राथमिक विद्यालय सिविल लाइन दबरई फिरोजाबाद
सत्र 2015–16 की छात्र उपस्थिति 50%

विद्यालय जॉइन करने के बाद विद्यालय में उपस्थिति बढ़ाने हेतु अभिभावकों से सम्पर्क का रास्ता अपनाया गया जिसके लिए नवीन प्रवेश के समय की बच्चों के कांटेक्ट नम्बर लिए जाते हैं।
बच्चा 3 दिन तक अनुपस्थित होने पर फोन द्वारा जानकारी की जाती है और 3 दिन से अधिक अनुपस्थिति होने पर घर जाकर सम्पर्क किया जाता है।
प्रवेश के समय ही अभिभावकों से कह दिया जाता है कि बच्चा बिना जानकारी दिए 7 दिन से अधिक अनुपस्थित रहने की दशा में नाम काट दिया जाएगा।
शिक्षण को गतिविधि आधारित बनाया गया जिससे बच्चे पढ़ाई में रुचि लेते हैं तथा नियमित उपस्थिति रहते हैं।
अलग–अलग गाँव के बच्चों की टोलियाँ बनायीं जो अपने आसपास के बच्चों की जानकारी विद्यालय को समय–समय पर उपलब्ध कराते रहते हैं तथा आवश्यकता पड़ने पर बच्चों को स्कूल में उपस्थिति हेतु सम्पर्क भी करते हैं।
इसका परिणाम ये है कि वर्तमान मे छात्र उपस्थिति 50% से बढ़कर 80% हो गयी है
और 100% उपस्थिति हेतु प्रयासरत हैं।

लुबना वसीम
प्रधानाध्यापक
प्राथमिक विद्यालय सिविल लाइन दबरई अंग्रेजी माध्यम

संकलनकर्ता
विनोद कुमार
भदोही

क्रमशः अगले अंक में.....

मिशन शिक्षण संवाद और रामपुर

मिशन शिक्षण संवाद, रामपुर समूह की स्थापना :मिशन शिक्षण संवाद, रामपुर समूह की स्थापना 12 दिसम्बर 2016 को श्री विमल कुमार जी के मार्गदर्शन में की गई। जिसमें शुरूआत २० सक्रिय शिक्षकों के साथ हुई। मिशन शिक्षण संवाद की डाइट, लखनऊ में आयोजित प्रथम कार्यशाला में रामपुर से दीपक पुंडीर, नितिन राजपूत और प्रमोद कुमार ने प्रतिभाग किया। इस कार्यशाला में रामपुर की तरफ से मुख्य अतिथि ललिता प्रदीप जी को पत्रिका "कोशिश ... बदलाव की" भेंट की गयी। लखनऊ कार्यशाला के बाद मिशन शिक्षण संवाद, रामपुर समूह में सदस्यों की संख्या में बढ़ोत्तरी शुरू हुई।

कपिलवस्तु महोत्सव में रामपुर जिले की सहभागिता : मिशन शिक्षण संवाद, उत्तर प्रदेश से चयनित नवाचारी शिक्षकों में रामपुर से भी तीन नवाचारकों दीपक पुंडीर, वर्षा गर्ग और चेतना सिंह का चयन हुआ। कपिलवस्तु समारोह से आये निमंत्रण से मिशन शिक्षण संवाद को रामपुर के प्रमुख समाचार पत्रों मां प्रमुखता से प्रकाशित किया गया। कपिलवस्तु से सम्मानित होकर आये शिक्षकों का बेसिक शिक्षा अधिकारी श्री सर्वदानन्द जी द्वारा शुभकामनाएँ दी गयीं। सम्मान प्राप्त शिक्षकों कों हिंदुस्तान, दैनिक जागरण और अमर उजाला जैसे राष्ट्रीय समाचारपत्रों में जगह मिली।

मिशन शिक्षण संवाद, रामपुर की प्रथम कार्यशाला : कपिलवस्तु महोत्सव से आने के बाद मिशन शिक्षण संवाद, रामपुर की प्रथम कार्यशाला का आयोजन १६ जनवरी २०१८ को प्राथमिक विद्यालय हजरतपुर, ब्लॉक – सैदनगर में आयोजित की गयी जिसमे पुर जिले से 30 सदस्यों ने प्रतिभाग किया। कार्यशाला का उद्देश्य सभी सदस्यों को मिशन शिक्षण समूह के बारे में जानकारी देना और सदस्यों को एक दृ दूसरे को जानना था। इस कार्यशाला में " कैसे हो विद्यालय में सुधार एवम आपके द्वारा किए प्रयासों" विषय के द्वारा कार्यशाला में प्रतिभाग लेने वाले सदस्यों ने अपने विचारों को सभी से साझा किए।

मिशन शिक्षण संवाद, रामपुर की दूसरी कार्यशाला : मिशन शिक्षण संवाद, रामपुर की दूसरी कार्यशाला का आयोजन नगर संसाधन केंद्र, रामपुर में किया गया। इस कार्यशाला में नए सदस्यों ने भी बड़ी उत्सुकता के साथ प्रतिभाग किया। इस कार्यशाला में एडमिन दीपक पुंडीर द्वारा कुछ महत्वपूर्ण फैसले लिए गये। जिले में आयोजित मिशन की कार्यशाला मे सुदूर क्षेत्रों में कार्यरत सभी शिक्षक साथी नहीं आ पाते हैं। अतः मिशन शिक्षण संवाद की ब्लॉक स्तर पर समूह का निर्माण किया जाए। हर ब्लॉक में वहाँ के एडमिन द्वारा ब्लॉक में एक कार्यशाला का आयोजन किया जाए जिसमे जिले स्तर के सदस्य जाकर मिशन शिक्षण संवाद के उद्देश्यों से वहां के शिक्षकों को अवगत करा सकें।

शिक्षक बच्चों से करें अपनेपन का व्यवहार

जागरण संवाददाता, रामपुर : मिशन शिक्षण संवाद के समन्वयक दीपक पुंडीर ने कहा कि शिक्षक बच्चों से अपनेपन का व्यवहार करें। इससे बच्चे सीखने में रुचि लेंगे। शिक्षा में गुणात्मक सुधार होगा। विद्यालय में अनुशासन बनाने में मदद मिलेगी। शुक्रवार को वह मिशन शिक्षण संवाद की कार्यशाला को संबोधित कर रहे थे।

मुहल्ला घोसियान स्थित नगर बीआरसी केंद्र पर आयोजित कार्यशाला में जिले के नवाचारी शिक्षकों ने भाग लिया। इस दौरान मिशन शिक्षण संवाद के नवाचारी शिक्षकों ने अपने-अपने विचार साझा किए। स्कोच पुरस्कार विजेता दीपक पुंडीर ने कहा कि शिक्षक नवाचारों के द्वारा शिक्षण कार्य को रुचिपूर्ण बना सकते हैं। इनके द्वारा शिक्षण कार्य सरल और रुचिपूर्ण हो जाता है। वर्षा गर्ग ने कहा शैक्षिक संवर्धन एवं नवाचारों के द्वारा बच्चे प्रेरित और उत्साहित होते हैं। मिशन शिक्षण संवाद के राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता अजहर अहमद ने समूह शिक्षण पर जोर दिया। कहा कि गतिविधि द्वारा शिक्षण कार्य सरल और प्रभावशाली हो जाता है। बच्चे गतिविधियों के द्वारा आसानी से सीखते हैं।

मिशन शिक्षण कार्यशाला में बोलते दीपक पुंडीर ● जागरण

सीमा गौहर ने उपस्थिति बढ़ाने के अभिभावकों से संपर्क पर जोर दिया।

फिजा इस्लाम ने बच्चों से बेहतर तालमेल बनाने के साथ ही अतिरिक्त समय देने का आह्वान किया। अमित कुमार शर्मा ने बच्चों को इन्फार्मेशन एंड

कार्यक्रम

- मुहल्ला घोसियान बीआरसी केंद्र पर हुई कार्यशाला
- कम्युनिकेशन टेक्नोलॉजी पर आधारित शिक्षण के तौर में बताया

कम्युनिकेशन टेक्नोलॉजी पर आधारित शिक्षण के विषय में बताया। मिशन शिक्षण संवाद के समन्वयक ने सभी नवाचारी शिक्षकों से आह्वान किया कि वह बच्चों से अपनेपन का व्यवहार करें। इससे शिक्षण के साथ ही कई समस्याओं का समाधान हो जाएगा। कठपुतली के द्वारा शिक्षण करना बताया। कार्यशाला में सईद सागर, मोहम्मद तनवीर, सरफराज अहमद, राधेश्याम, वसीम अहमद, शबाना, शबनम आरा, शमा परवीन, शबीना मंसूरी, रेनु सिंह, पुजारानी, राम बहादुर आदि रहे।

शिक्षकों ने बदल दी विद्यालयों की सूरत

जागरण संवाददाता, रामपुर : मिशन शिक्षण संवाद से जुड़े शिक्षक-शिक्षिकाओं ने एक नई राह बनाई है। विद्यालय भी वही हैं और संसाधन भी वही हैं। अलग है तो बस शिक्षकों की सोच, जिसके बल पर उन्होंने परिषदीय विद्यालयों की सूरत ही बदल दी। आज जनपद में अनेक ऐसे विद्यालय हैं, जो शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के निज प्रयासों से चमक उठे हैं। पूरे प्रदेश में फैले इस समूह से जुड़े जनपद के 200 से ज्यादा नवाचारी शिक्षक हैं, जो तरह-तरह के नवाचारों के माध्यम से बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने में लगे हैं।

परिषदीय विद्यालयों के ज्यादातर शिक्षक अमूमन संसाधनों का रोना रोते हैं। कोई कहता है कि विद्यालय की हालत जर्जर है, तो कोई बच्चों को पढ़ाने के लिए सहायक सामग्री न होने की बात करता है। कोई शिक्षक कहता है कि स्कूल में पढ़ाने के अलावा दूसरे कार्य इतने हैं कि बच्चों को पढ़ाने के लिए वक्त ही नहीं मिलता। कई शिक्षक ऐसे भी होते हैं, जो स्टाफ और बच्चे न होने का बहाना बनाते हैं। कई शिक्षक ऐसे हैं, जिन्होंने इन कमियों को दर-किनार कर एक अलग मिसाल पेश की है। बेसिक शिक्षा के उत्थान को आपसी सहयोग एवं सकारात्मक सोच के बल पर नई पहचान दिलाने का काम कर रहे हैं। शिक्षा का उत्थान एवं शिक्षक के सम्मान का मुख्य उद्देश्य लेकर कार्य कर रहे हैं। शिक्षक एवं शिक्षिकाएं अपने दम पर विद्यालय को

निजी प्रयासों से विद्यालयों को सजाया और संवारा, बच्चों की उपस्थिति में हो रहा निरंतर सुधार

स्वच्छ और सुंदर बना रहे हैं। नवाचारों द्वारा शिक्षण कार्य कर रहे हैं। ऐसा करने से एक तरफ जहां शिक्षा में गुणवत्ता बढ़ रही है, तो वहीं दूसरी ओर बच्चों की उपस्थिति में लगातार सुधार हो रहा है। शिक्षकों के प्रयासों से नामांकन भी बढ़ रहा है। सोशल मीडिया से जुड़े शिक्षक एवं शिक्षिकाएं बड़े ऊर्जावान हैं। जनपद के परिषदीय विद्यालयों में तैनात दीपक पुंडीर, सुरेंद्र यादव, अजहर अहमद, फिजा इस्लाम, शबाना, शबनम आरा, तलत रानी, निर्देश लता, नजाकत, फरजंद अली, वर्षा गर्ग, शिव कुमार शर्मा, अमित कुमार, मोहम्मद तनवीर, शीला रोकली, चेतना सिंह, नसरीन बी, मुजाहिद खां, हरिराम दिवाकर, डॉक्टर सरफराज, वसीम अहमद, राहुल भारद्वाज, किरन भारद्वाज, शालिनी पांडे एवं शकुन आदि ऐसे शिक्षक हैं, जिन्होंने अपने दम पर विद्यालय के बच्चों के लिए स्वच्छ और सुंदर बनाया। इन शिक्षकों ने अपने निज प्रयासों से विद्यालयों को सजाया और संवारा है। यह वही शिक्षक हैं, जिन्होंने अपने प्रयासों से परिषदीय विद्यालयों की तकदीर और तस्वीर संवार दी। जनपद में दो सौ से ज्यादा ऐसे विद्यालय हैं, जिनका मिशन शिक्षण संवाद से जुड़े शिक्षक एवं शिक्षिकाओं ने कायाकल्प किया है।

टीचर्स क्लब उ0 प्र0 और मिशन शिक्षण संवाद उ0 प्र0 द्वारा लखनऊ के भागीदारी भवन में आयोजित शैक्षिक गुणवत्ता कार्यशाला में रामपुर मिशन शिक्षण संवाद का प्रतिभाग : टीचर्स क्लब उ0 प्र0 और मिशन शिक्षण संवाद उ0 प्र0 द्वारा लखनऊ के भागीदारी भवन में आयोजित शैक्षिक गुणवत्ता कार्यशाला जिसका संयोजन शिक्षा निदेशक (बेसिक) श्री सर्वेन्द्र विक्रम जी के दिशा निर्देशन में किया गया। कार्यशाला में राज्य भर से अच्छे विद्यालयों के आदर्श शिक्षकों को अपना अनुभव साझा करने के लिए आमंत्रित किया गया। कार्यशाला के समापन पर विशिष्ट अतिथि संयुक्त शिक्षा निदेशक (बेसिक) श्रीमती ललिता प्रदीप जी और अपर शिक्षा निदेशक श्रीमती रूबी सिंह जी द्वारा विद्यालयों में अच्छा करने वाले शिक्षकों को प्रशस्ति पत्र और और मोमेंटो देकर सम्मानित किया गया। कार्यशाला में जनपद से दीपक पुण्डीर, वर्षा गर्ग, मोहम्मद तनवीर, अमित कुमार शर्मा, रीनू सिंह, शालिनी पाण्डेय आदि को आमंत्रित किया गया। रामपुर के मोहम्मद तनवीर पूर्व माध्यमिक विद्यालय जालपुर,स्वार और रामबहादुर पूर्व माध्यमिक विद्यालय रतनपुरा शुमाली का उत्तर प्रदेश के श्रेष्ठ 30 विद्यालय में चयन के लिए सम्मानित किया गया।

मिशन शिक्षण संवाद, रामपुर ग्रुप की दैनिक जागरण,रामपुर ने की प्रशंसा : दैनिक जागरण राष्ट्रीय समाचार पत्र ने मिशन शिक्षण संवाद, रामपुर समूह के कार्यों को अपने समाचार पत्र में प्रकाशित किया। " मिशन शिक्षण संवाद से जुड़े शिक्षक और शिक्षिकाओं ने एक नई राह बनायी है। विद्यालय भी वही हैं और संसाधन भी वहीं हैं। बस अलग है तो शिक्षकों की सोच, जिसके बल पर उन्होंने अपने विद्यालयों की सूरत ही बदल दी। आज जनपद के 200 से भी अधिक शिक्षक और शिक्षिकाएँ इस समूह से जुड़े हैं। "

मिशन शिक्षण संवाद, रामपुर ने किया जिला स्तर की सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता में सहयोग : मिशन शिक्षण संवाद, रामपुर ने जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी ऐश्वर्या लक्ष्मी के मार्गदर्शन में जिले में पहली बार एक सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया। मिशन शिक्षण संवाद, रामपुर ने प्रतियोगिता के लिए पाठ्यक्रम के लेकर पेपर निर्माण में अपना सहयोग दिया।

सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का प्राथमिक और जूनियर स्तर दोनों पर आयोजन किया गया। यह परीक्षा विद्यालय स्तर से लेकर जनपद स्तर आयोजित की गयी। प्राथमिक और जूनियर स्तर के टॉप 25 छात्रों और छात्राओं के साथ उनके सभी शिक्षकों को शिक्षक दिवस के अवसर पर " एक शाम स्वच्छता और शिक्षा के नाम " कार्यक्रम में अल्पसंख्यक मंत्री, उत्तर प्रदेश सरकार श्री बलदेव सिंह औलख, जिलाधिकारी श्री महेंद्र बहादुर सिंह और जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी श्रीमती ऐश्वर्या लक्ष्मी के द्वारा सम्मानित किया गया।

साभार :

दीपक पुंडीर (जिला संयोजक)

मिशन शिक्षण संवाद, रामपुर।

मिशन शिक्षण संवाद

डिस्क्लेमरः— मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका शिक्षण संवाद बेसिक शिक्षा के शिक्षकों का आपसी सीखने—सिखाने का स्वैच्छिक और स्वयंसेवी साझा प्रयास है। इस पत्रिका में अनमोल रत्न शिक्षकों के विवरण, शिक्षकों के लेखों, बाल कविताओं, बाल कहानियों से लेकर महापुरुषों के विचार, अधिकारीगण के लेख और सामान्य ज्ञान के प्रश्न भी सम्मिलित हैं। इस पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख, कविता की मौलिकता और तथ्यात्मकता के लिए सम्बंधित स्तम्भकार उत्तरदायी होगा। यद्यपि पत्रिका में प्रकाशित सभी स्तम्भों में उच्चकोटि की गुणवत्ता का ध्यान रखा गया है तथापि किसी भी तथ्य के लिए संपादक मंडल दावा नहीं करता है। किसी भी सुझाव या शिकायत के लिए मिशन के ईमेल shikshansamvad@gmail.com या व्हाट्सएप्प नम्बर—9458278429 पर सम्पर्क कर सकते हैं।

1-फेसबुक पेज: https://m.facebook.com/shikshansamvad/

2- फेसबुक समूह: https://www.facebook.com/groups/1180108654646 49/

3- मिशन शिक्षण संवाद ब्लॉग : https://www.shikshansamvad.blogspot.in

4-Twitter(@shikshansamvad): https://twitter.com/shikshansamvad

5-यू-ट्यूब: https://www.youtube.com/channel/UCPbbM1f9CQuxLymELvGgPig

6— व्हाट्सएप नं0 : 9458278429

7— ई मेल : shikshansamvad@gmail.com

8— वेबसाइट : www.missionshikshansamvad.com

विमल कुमार
पूर्व माध्यमिक विद्यालय अमराहट,
राजपुर, कानपुर देहात